मूल्य रु. ५-०० सलंग अंक ८५ - मई-२०१४

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी - कच्छ में प.पू. बड़े महाराजश्री का ७० वाँ प्राकट्योत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में बालस्वरुप घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री (२) पाटोत्सव अभिषेक का दर्शन करते हुए हरिभक्तों की भीड़ (३) रामनवमी - श्रीहरि प्राकट्योत्सव की श्री नरनारायणदेव समक्ष आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री (४) कालुपुर मंदिर में हनुमान जयंती प्रसंग पर श्री हनुमानजी का दर्शन । (५) रामनवमी उत्सव प्रसंग पर अमदावाद मंदिर के प्रसादी के चौक में प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में कीर्तन भक्ति करते हुए अपने गायक कलाकार श्री जयेशभाई सोनी तथा संचालन करते हुए नारायणमुनिदासजी ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - ७ ● अंक : ८५
मई-२०१४

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा पू. गादीवालाजी द्वारा किये गये संप्रदाय के लिये महत्वपूर्ण कार्य	०६
०४.	मांडवी (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री का ७० वाँ प्रागट्योत्सव	०८
०५.	स्वयं का अवतार अन्य का अवतार	०९
०६.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का दिशा सूचक आशीर्वचन	१२
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१५
०८.	सत्संग बालवाटिका	१७
०९.	भक्ति सुधा	१९
१०.	सत्संग समाचार	२२

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● वंशपारंपरिक देश में ५०१-०० ● विदेश १०,०००-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

अने ते भगवान छे ते ज आ देहना प्रवर्तावनारा छे। ते गमे तो देहने हाथीए बेसारोने गमे तो बंधी खाना मां नंखावो अने गमे तो आ देहमां कोइक मोटो रोग प्रेरो। पण कोई दिवस भगवान आगण एवी प्रार्थना करवी नथी जे, ''हे महाराज ! आ मारु दुःख छे तेने टाडो शा माटे जे, आपणे पोताना देह ने भगवानमां गमतामां वर्तावो छे। ते जेम ए भगवाननुं गमतुं होय तेमज आपणने गमे छे, पण भगवानना गमता थकी पोतानुं गमतुं लेशमात्र पण नोखुं राखवुं नथी। अने आपणे ज्यारे तन, मन, धन भगवानने अर्पण कर्युं त्यारे हवे भगवाननी इच्छा तेज आपणुं प्रारब्धछे। ते विना बीजुं कोई प्रारब्धनथी। माटे भगवाननी इच्छाए करीने गमे तेवुं सुख दुःखआवे तेमा कोई रीते अकड़ाइ जवुं नही ने जेम भगवान राजी तेमज आपणे राजी रहेवुं।(ग.अं. १३)

यह अलौकिक वात समझने लायक है तथा जीवन में उतारने लायक है। स्वयं को जो अच्छा लगे वह नहीं करना चाहिए। जिस तरह अपने इष्टदेव सर्वोपरि श्रीहरि प्रसन्न हों वैसा ही करना चाहिए। उसी में अपना सुख है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (अप्रैल-२०१४)

१ से ७ न्युझीलेन्ड ओकलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रगंस पर पदार्पण।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर धूडकोट तथा प्रसंग पर पदार्पण।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर रजत शताब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर धनाजा (वेगडवाव) मूली देश पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर कुकडिया (ईडर देश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१३ से १५ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर केरा (कच्छ) पदार्पण।

१६ से १८ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री के ७० वे प्रागट्योत्सव अपनी अध्यक्षता में संपन्न किये।

१९ से २० श्री स्वामिनारायण मंदिर रामपर (कच्छ) तथा भुज पदार्पण।

२१ से २२ श्री स्वामिनारायण मंदिर सूरजपर (कच्छ) तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर नागलपुर (माडंवी-कच्छ) पदार्पण

२९-३० श्री स्वामिनारायण मंदिर गोडपर (कच्छ) पदार्पण।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०१४)

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर रजत शताब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१५ विसनगर गाँव में सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

१७ से १९ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) पाटोत्सव प्रसंग तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के ७० वें प्रागट्योत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१९ सायंकाल श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्म शक्ति बापूनगर सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर बोरणा (मूली देश-ता. लींबडी) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२८-२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर गोडपर (कच्छ) पदार्पण।

प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा पू. गादीवालाजी द्वारा किये गये संप्रदाय के लिये महत्वपूर्ण कार्य

ले. : युवक मंडल तता महिला मंडल

प.पू.ध.धु. १००८ श्री आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री द्वारा ९ वर्ष में करीब १८० मंदिरो का निर्माण कार्य हुआ तथा उसमें देव प्रतिष्ठा की गयी। एक वर्ष में करीब २० मंदिरो का निर्माण हुआ ऐसा समझना चाहिये। यह संप्रदाय में किसी इतिहास में देखने को नहीं मिलता। यह लिखने का एक ही कारण है कि कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि महाराजश्री तो मंदिर में होते ही नहीं। आफिस में होते ही नहीं। अरे यदि वे आफिस में ही मिलते तो देश विदेश में १८० मंदिरों की प्रतिष्ठा कैसे होती। श्रीजी महाराज ने जो संकल्प किया था कि प्रत्येक पत्ते पर स्वामिनारायण का नाम लिखा जायेगा, वह संकल्प प. महाराजश्री पूरा कर रहे हैं। एभी गृहस्थ हैं। लेकिन पू. लालजी महाराजश्री एवं पू. श्रीराजा को भी समय नहीं देपाते। क्यों ? हम सभी के कारण। फिर भी लोग शंका कुशंका करने में अटकते नहीं है। सतत विचरण करते रहते हैं। रात-दिन का ख्याल किये विना, इसी लिये तो सत्संग की प्रगति हो रही है, जो कभी नहीं हुई, जो करीब १० वर्ष में मात्र दश वर्ष में ही नहीं बल्कि जब वे लालजी महाराजश्री थे तब से विचरण कर रहे हैं। रजत सुवर्ण जयंती के समय लगातार छ महीने तक विदेश भ्रमण करके उत्सव को अच्छी तरह संपन्न करने में लगे रहे। विचार करो लगातार छ महिने घर से दूर। हमे ख्याल है जब वे वापस आये तो दाढी-बाल बढे हुए थे। क्योंकि रात-दिन सभा करके प्रसंग के लिये धन एकत्रित किये थे। पू. बड़े महाराजश्री का संकल्प था कि छपैया में संगमरमर का मंदिर बने, इसके लिये सतत विचरण करते रहे। इसी तरह म्युजियम के लिये दो-दो बजे तक करसनभाई के साथ मीटींग करके नकशा बनाये तथा देश-विदेश के मंदिर में म्युजियम के लिये सभा किये एवं लोगो के घर पदार्पण किये। महीने में तीन-तीन बार विदेश जाते थे। देखा जाय तो म्युजियम का कार्य पूर्ण हुआ तब तक घर पर रहे ही नहीं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि ये सभी काम मौन रहकर किये।

कभी भी वे यह नही कहे कि यह विचरण मैं किसके लिये कर रहा हूँ। जो भी ये करते हैं यह कहते नहीं यही इनकी महानता है। सभी के संकल्प पूर्ण करते है लेकिन कभी उल्लेख नहीं करते, दूसरो को करने भी नहीं देते। टर्फ स्कूल तो चार महीने में ही बनकर तैयार हो गयी।

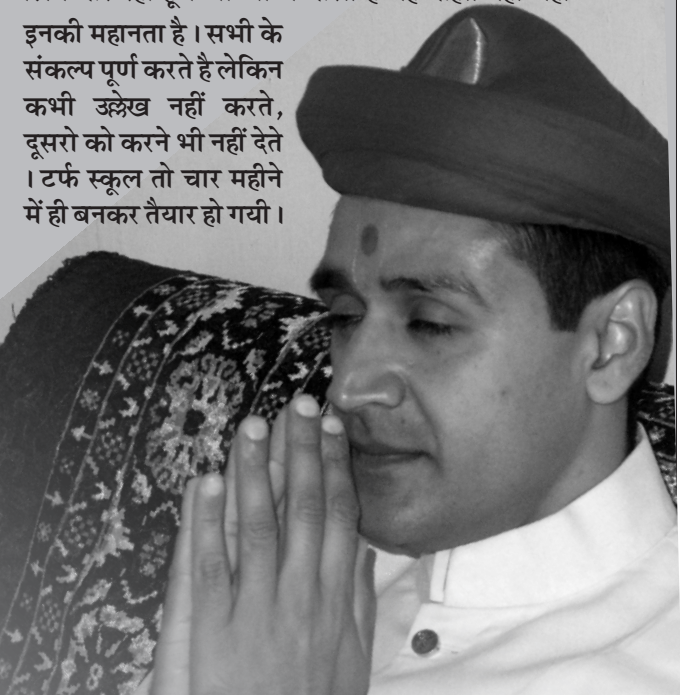

वह भी पू. महाराजश्री द्वारा ही बनाई गयी है। स्कूल हो या मंदिर का गेस्ट हाउस हो, सभी कार्य करवाते हैं लेकिन अपना नाम कहीं लिखवाते नहीं है। सभी जगहों पर बड़े महाराजश्री का नाम होता है। सदा एक ही वात कहते है कार्य पूर्ण होना आवश्यक है, नाम की आवश्यकता नहीं। यह कैसी निर्मलता है। यह सब इस लिये लिख रहे हैं कि जिन लोगों को सत्य का पता नहीं वे लोग सत्य जानें। दुःख होता है कि जो प्रतिदिन आनेवाले सत्संगी है वे ऐसा कहते है कि जब देखो तब आफिस में हंसते ही रहते हैं, जोर से हंसते है, देखो तो सही हंसते हंसते कितना कार्य कर देते हैं। दौडते-दौडते क्या थाक नहीं लगती होगी ? फिर भी मुख पर थोड़ी भी सिकन नहीं होती।

अब आगे पू. गादीवालजी की बात लिखते हैं। पू. गादीलाजी द्वारा भी ऐतिहासिक कार्य हुये हैं। आज तक कभी भी गाँवो में महिलाओं की सभा हुई हीं नही थी। इन्होंने ही गाँव-गाँव में सत्संग सभा का आरंभ किया। सत्संगी बहने ग्रुप बनाकर एरिया के अनुसार गांओ में सभा करने की आज्ञा की। स्वयं भी गाओ में जाती है। जो सभा आरंभ की वह सभा मात्र एकबार के लिये नहीं अपितु आजीवन चलती रहे इस हेतु से की है। शिबिर करती रहती है। एकादशी को सदा के लिये हवेली में सभा प्रारंभ की आज करीब ७ वर्ष से चालू है। प्रत्येक प्रबोधिनी एकादशी को रात्रि में १० बजे से प्रातः ५ बजे तक जागरण रखती है। इतनी व्यस्तता होने पर भी अचूक हाजरी देती हैं। पू. लालजी महाराजश्री तथा पू. श्री राजा को भी कभी अकेले नहीं छोड़ती। इस तरह समय का ध्यान रखती हैं। घर का तथा सत्संग का दोनो का काम होजाता है। आश्चर्य होता है कि एक ही दिन में कच्छ जाकर वापस आजाती हैं। उन्हें थाक नहीं लगती। इन्हें थाक नहीं लगती होगी ??? लेकिन वे कहलीं है कि यह गद्दी रोज श्रृंगार से सुसज्ज बैठने के लिये नहीं है। कार्य तो करना ही पड़ेगा। महाराजने जिसके लिये इस गादी की परंपरा बनाई है, उसके कुछ सिद्धांत है, उत्तरदायित्व है, उसे पूरा करना पडेगा। सदा हंसता मुख देखकर शांति मिलजाती है, ऐसी वात बहनें कहती है।

सभा के अलांवा अनेक कार्य और भी ऐतिहासिक हैं। छपैया में नारायण सरोवर की आरती प्रारंभ करवायी। उन्होंने कहा कि जब गंगाजी की तथा यमुनाजी की नियमित आरती होती है तो नारायण सरोवर की क्यों नहीं ?? नारायण सरोवर की तरह और क्या हो सकता है। वहाँ के महंत स्वामी गादीवालाजी की वात का मान रखकर नियमित नारायण सरोवर की आरती करवाते हैं। हवेली में सां.यो. बहने कभी भी व्यासपीठ पर बैठकर कथा नहीं की थी, उन्हें भी कथा करने के लिये प्रेरित किया। सां.यो. बहनो को संकोच होता था कि पहले कभी व्यास आसन से कथा नही की है, कैसे करेंगे ? लेकिन ऐसा प्रोत्साहन दीं कि हवेली की सां.यो. बहने कथाये एवं सभाओं को करने लगी। बहनों का सत्संग इतना अधिक फैला, जिसकी कल्पना नहीं कर सकते। एक प्रसंग का यहाँ उल्लेख करना चाहती हूँ एक बार गादीवालाजी एक बहन के घर पदार्पण कीं। बहन ने कहा कि कपड़े पर अपने पैर की (चरणारविंद) की छाप दे दीजिये। गादीवालाजी एक दम आश्चर्य में पड़ गयीं कि यह क्या ??? मना कर दिया। गादीवालाजी बड़ी नम्रता से कहीं कि चरणारविंद केवल अपने भगवान का होता है, मैं भगवान नहीं हूँ। मेरे चरण की छाप पूजा में रखेगी तो हमें पाप लगेगा। महाराजने इस गद्दी पर श्री नरनारायणदेव की पहचान कराने के लिय भेंजा है। स्वयं की पूजा कराने के लिये नहीं। सिंहासन पर मात्र इष्टदेव की मूर्ति तथा इष्टदेव के चरणारिवंद होना चाहिये। दूसरा कुछ भी नहीं। यह सुनकर महिलाओ को थोडा अच्छा नहीं लगा। लेकिन बाद में हुआ कि गादीवालाजीने सत्य ही कहा है। इस तरह पूजा में भगवान के विया अन्य चरण छाप रखने की प्रथा बन्द करवायी। इनका उद्देश्य मात्र सिद्धान्त को सामने लाना है। स्वयं के प्रवचन में सदा एक गरीब तथा आवश्यकता वाले को सहयोग करने का आग्रह रखती है। उनके अनुसार पहले मनुष्य बने बाद में भक्त बनें। मानुसाई विना का भगतपना विना काम का है। १०० माला फेरते हों लेकिन मन-वाणी-कर्म से जीवों को दुःखी करते हों तो ऐसी माला व्यर्थ कही जायेगी। गादीवाला के विषय में जो कुछ मुझे समझ में आया उसे लिख रही हूं। क्योंकि इनका लाभ तो महिला वर्ग को ही मिलता है। गादीवाला जी सां.यो. बहनो का भी खूब ध्यान रखती है। अभी तक सां.यो. बहने कहीं जाना होता था तो रिक्शा में जाना-आना करती थी। लेकिन गादीवालाजीने मंदिर से एक स्पेश्यल गाड़ी की व्यवस्था करवा दीं है। वे कहती है कि बहने रिक्शा में जाये यह ठीक नहीं है। सब कुछ त्याग कर यहां पर आयी हैँ, इस लिये हमारा उत्तरदायित्व बनता है कि इनका ध्यान रखें। इतनी उदारता, अपनापन, पवित्र विचार ये सव अन्यत्र कहीं नही मिलता। आपके भीतर थोडा भी अभिमान नहीं है। श्री नरनारायणदेव जयंती के अवसर पर फूलदोलोत्सव प्रारंभ करवायी। कितने वर्षो से बन्द था।

यह सब लिखने का कारण एक ही है कि प.पू. महाराजश्री तथा गादीवालाजी कभी भी अपनी बात को बाहर आने नहीं देते। लेकिन मेरे विचार के अनुसार यह वात सत्संगी मात्र को जाननी चाहिये। सभी को धन्यता का अनुभव होता है कि करीब १० वर्ष से ऐसा सरल तथा सौम्य महाराजश्री तथा गादीवालाजी का सानिध्य मिला है। तो आइए सभी सत्संगियों की तरफ से उन्हे धन्यवाद दिया जाय तथा उन्हीं से आशीर्वाद प्राप्त हो। दोनो जन को स्वयं की प्रशंसा अच्छी नही लगती। वे जानेंगे तो हमें अवश्य डांटेगे। फिर भी सत्संग समाज के उत्कर्ष हेतु उपरोक्त जो भी मेरी समझ में आया उसका उल्लेख किया है।

श्री स्वामिनारायण

मांडवी (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री का ७० वाँ प्रागट्योत्सव

- ब्र.स्वा. राजेश्वरानंदजी (श्री नरनारायणदेव पुजारी)

समग्र कच्छ का सत्संग समाज आज आनंद के हिलोरे ले रहा था । चैत्र कृष्ण-३ के शुभ दिन सूर्य नारायण देव भी अपनी प्रचंड गर्मी को भूलकर शीतलता प्रदान कर रहे थे । देवतागण भी आकाश में दुंदुभी बजा रहे थे । ऐसे वातावरण में श्रीहरि के ६ठ्ठे वंशज प.पू. बड़े महाराजश्री का मांडवी (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर में लाखो की मेदिनी की उपस्थिति में धर्मकुल की उपस्थिति में भुज के महंत स्वामी धर्मनंदनदासजी तथा अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, पार्षद जादव भगत तथा पूज्य बड़े संतो एवं महंतों की उपस्थिति में युवान संतो के तथा हरि भक्तों के प्राण प्यारे प.पू. बड़े महाराजश्री का ७० वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था । वर्तमान के भुज के संत महाराजश्री के प्रति अनहद प्रेम का प्रदर्शन कर रहे हैं । मांडवी के अक्षरधाम तुल्य विशाल मंदिर के सभा मंडप में उद्घाटन प्रसंग पर श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप विराजमान थे । हरिभक्तों द्वारा ७० फुट की सुगन्धित पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया गया था । इसके बाद संतो तथा हरिभक्तों द्वारा पूजन अर्चन-स्वस्तिवाचन किया गया था । न्युयोर्क के प.भ. उदय गोसलिया परिवार द्वारा तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद की तरफ से प्रकाशित श्री जनमंगल स्तोत्र की सीडी का प.पू. बड़े महाराजश्रीने विमोचन किया था । प.पू. बड़े महाराजश्री के बाल्यावस्था से लेकर आजतक के सभी प्रसंग बताये गये थे । प.पू. बड़े महाराजश्री गद्दी पर से निवृत्त हुए फिर भी लोगों में उनके प्रति प्रेम कम नहीं हुआ, बल्कि और अधिक हो गया है।

प.पू. बड़े महाराजश्री को कच्छ के हरिभक्तों की तरफ से चरण भेंट जो भी मिली वह श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेंट कर दी गयी । यह महाराजश्री की निस्पृहता का सबसे बड़ा परिचायक है । ऐसे महाराजश्री के चरणों में कोटी - कोटि वन्दन ।

समग्र महोत्सव का सभा संचालन उत्तमप्रियदासजीने बड़े उत्साह के साथ किया था ।

बहनों को भी क्यों भूला जाय ! प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी, पू. श्री राजा महिला वर्ग के विशेष आग्रह पर पधारी थी । सभी को दर्शन का सुख प्रदान की थी । कच्छ के २४ गाँव का सत्संग देश-विदेश से आकर आज यहाँ उपस्थित था ।

नये आगन्तुको ऐसा लगेगा कि इतनी धारावाहिक प्रेम के प्रवाह का क्या कारण होगा - इसमें मात्र श्रद्धा एवं प्रेम ही कारणहै । यहाँ पर प्रचार नहीं किया गया था । यहाँ पर भगवान के अपर स्वरुप के दर्शन हेतु इतनी बड़ी संख्या में नरनारी उपस्थित हुए थे । सभी भक्त भगवान के तीनो अपर स्वरुपों का दर्शन करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे । धर्मकुल के प्रति कितनी निष्ठा है, इस मानव मेदिनी से भासित हो रहा था ।

इस प्रसंग पर अमदावाद, नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा अमदावाद के कोठारी स्वामी नारायणमुनिदासजी, स्वामी योगेश्वरदासजी, स्वामी जयवल्लभदासजी तथा अन्य संतवृन्द पधारे हुए थे ।

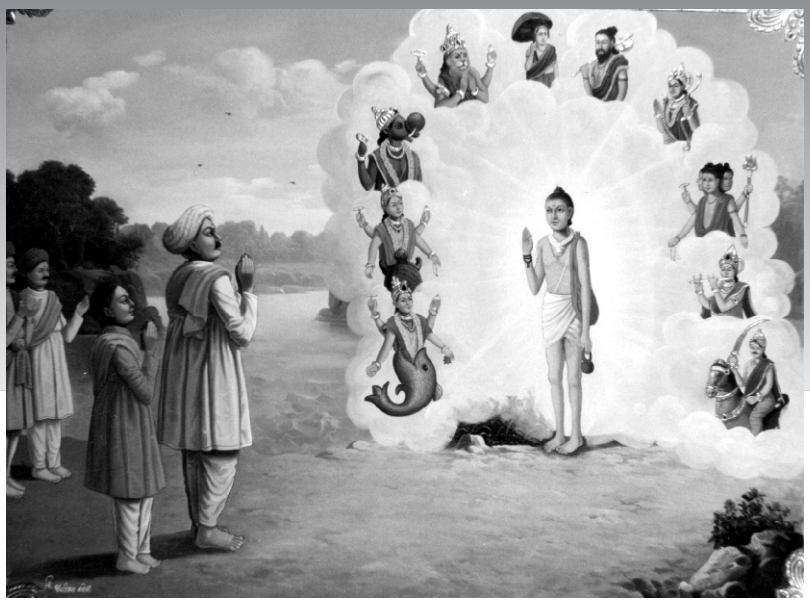

स्वयं का अवतार अन्य का अवतार

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास
(जेतलपुर धाम)

गढडा मध्य प्रकरण ९ वें वचनामृत में सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के वचन हैं कि ''ल्यो परमेश्वरनी वार्ता करिये । बाद में श्रीजी महाराजने कहा कि यदि ज्ञानमार्ग की समझ आजाय तो भगवान के स्वरुप में कभी द्रोहका भाव नहीं आता । यदि भगवान के वचन का कहीं लोप भी होता हो तो उसकी कोई चिंता नहीं । यदि भगवान के वचन का लोप हो गया हो तो प्रार्थना करने से दोष मुक्त होना संभव है लेकिन भगवान के स्वरुप का द्रोह हुआ हो तो उस दोष से मुक्त होना संभव नही है ।

स्वयं को भगवान का जो स्वरुप मिला है उस दिव्य मूर्ति को सभी अवतार का कारण (अवतारी) मानना चाहिये । जो ऐसा नहीं जानता उस स्वरुप को निराकार मानता है । अथवा दूसरे अवतार जैसा मानता है तो उस स्वरुप का द्रोह कहा जायेगा ।

साकार निराकार की वात सरल है उसे समझा जा सकता है । परंतु ''दूसरे अवतारों के जैसा जो मानता है ।'' यह वात बड़ी गहन तथा विचारणीय कही गयी है । जिन मुमुक्षुओं को इन वचनों में विस्वास न हो तो भगवान के तथा भगवान के अवतारों में द्रोह हो सकता है । ऐसे द्रोह में जो फंसा वह कभी उसमें से निलक नहीं सकता । इसके अलांवा संप्रदाय के मंदिर, मूर्ति, उत्सव, व्रत, शिक्षापत्री, वचनामृत के वचन, मंत्रदीक्षा, गुरुमंत्र, इत्यादि में से श्रद्धा हट जाती है । इन सभी के प्रति ऐसी द्विविधा उत्पन्न होती है कि इसका कोई निराकरण हीं नही होता । इसके बाद सत्संग के प्रवाह में से निकलकर छोटे मोटे टुकडो में बिक जाता है । सत्संग में भजन भक्ति के बदल में द्रोह का पहाण खड़ा करके नाना युक्तियों से सर्वावतारी श्रीहरि का द्रोह करता है ।

अब दूसरे अवतार जैसा न मानने के विषय में स्पष्ट समझने लायक है । स्वयं का अवतार तथा दूसरे अवतार की व्याख्या यहाँ पर स्पष्ट हुई है । अवतार शब्द का मात्र प्रयोग नहीं । दूसरे अवतार शब्द का प्रयोग किया गया है । सर्व प्रथम स्वयं का अवतार तथा दूसरे अवतार की व्याख्या वचनामृत में से समझनी चाहिए । बड़े बड़े तत्व चिंतक, ज्ञानी, शास्त्रविद्, पुराणी, ध्यानी जिस बात में अपने वचन स्पष्ट नहीं करसके, उन सभी का उत्तर सर्वावतारी श्रीजी महाराज गढडा मध्य प्रकरण ९१ नवें वचनामृत में अपने अवतार तथा दूसरे अवतार को बड़े ही सरल ढंग से समझाया है । ३१ वाँ वचनामृत जिसे समझ में आयेगा उसी को ९ वाँ वचनामृत समझ में आयेगा । मध्य के ८१ में दूसरे अवतार के रुप में

''विराट'' को कहा गया है। विराट में वासुदेव का प्रवेश हुआ, जिससे विराट नारायण उत्पन्न हुए । विराट नारायण अपनी क्रिया में समर्थ हुए । सृष्टि के कार्य में विराट, संकर्षण, अनिरुद्ध, प्रद्युम्नादि तीन गुणों से युक्त जो स्वरुप है वह वासुदेव भगवान का सगुण स्वरुप है। उस उपासना के बल से वैराज पुरुष उत्पत्ति, स्थिति, लय रुप क्रिया के सामर्थ्य को प्राप्त करते हैं । जिस तरह महाजीवन ब्रह्मादि देवों की भगवान के रुप में उपासना करता है। उस समय धर्म, अर्थ, काम मोक्ष रुप फल की प्राप्ति करता है । जब भगवान के अवतार राम, कृष्णादिक की उपासना करता है तब ब्रह्मरुप हो जाता है और मुक्ति को प्राप्त करता है। इसी तरह विराज पुरुष को भी है । इस तरह विराट आदि में भगवान वायुदेव का प्रवेश होने से दूसरा अवतार कहा जायेगा। मध्य के ३१ वें वचनामृत में अपना अवतार तथा दूसरे अवतार की स्पष्ट व्याख्या उत्पत्ति आदि की स्पष्टता भी की है। अब अपने तथा दूसरे अवतारों के विषय में संक्षेप में अन्य वचनामृतों में श्रीहरि ने जहाँ-जहाँ पर वचनामृत मेंअपने अपने अमृतवचन बोले है उनके विषय में जाने -

वडताल-२ में - राकृष्णादिकरुप धारण करते हैं तथा चतुर्व्यूह रुप में रहते हैं। रामकृष्णादि अपने अवतार विराटादि चतुर्व्यूह दूसरे अवतारों में धारण करते हैं । दूसरे अवतार में वही स्वरुप वर्तित होता है - ऐसा कहा जाता है। चतुर्व्यूह की बात ग.प्र. ६६ तथा ६३ एवं ७८ में भी की गयी है। ग.अं. १६ में कहा गया है कि इष्टदेव के दूसरे अवतार के साथ प्रीति नहीं होती है। ग.म. ६३ में विराटादि में प्रवेश करके उन-उन रुपों में प्रवर्तित होते हैं। ग.प्र. ३३ में अक्षर पुरुष प्रकृति विराट रुप में ब्रह्मादिक प्रजातिरुप में नारद सनाकादि के रुप में वर्तित होते हैं। ग.प्र. ४१ में अक्षर पुरुष प्रकृति आदि के विषय में पुरुषोत्तम भगवान, अन्तर्यामी के रुप में सभी में प्रवेश करके रहते हैं।

ग.प्र. ७ में पुरुषोत्तम, अक्षर, माया, ईश्वर, जीव इस तरह पांच भेद बताया गया है जो अनादि हैं। ग.प्र. ८ में रामकृष्णादिक रुप को जीवकल्याण के लिये बताया गया है। ग.प्र. ५२ में जो श्री कृष्ण नारायण हैं वे चतुर्व्यूह रुप में अवतार धारण करते हैं। इस स्वरुप का जो भक्ति करता है उसका कल्याण होता है। यहाँ पर अपने तथा दूसरे अवतार को अलग कहे हैं। ग.प्र. ७१ में परब्रह्म पुरुषोत्तम जो भगवान है वे कृपा करके जीव का कल्याण करने के लिये पृथ्वी पर प्रगट होते हैं। ग.प्र. ७४ में अन्य अवतार की अपेक्षा जो नरनारायण है वे अत्यन्त त्यागी है, जीवों के कल्याणार्थ तप करते है, नरनारायण साक्षात् भगवान हैं। ग.प्र. ७८ में चतुर्व्यूह तथा केशवादि २४ मूर्तियां तथा बाराहादिक जो अवतार वे अलग-अलग बताये गये हैं। लो.-४ में स्वयं को द्विभुज बताये हैं और आवश्यकता के अनुसार जहाँ जितने प्रकाश की आवश्यकता है वहाँ उतना प्रकाश करते है, तथा मच्छ कच्छपादि रुप में भासते हैं। लो.७ में एकदम स्पष्ट दो प्रकार का निरुपण है - जगत की उत्पत्ति हेतु अनिरुद्ध स्वरुप, संहार के लिये संकर्षण रुप, स्थिति के लिये प्रद्युम्न रुप होते हैं । इसके अलांवा मच्छ पच्छपादि अवतार धारण करते हैं । अर्थात् अनिरुद्धादि अन्य अवतार तथा मच्छ कच्छपादि स्वयं का अवतार यह स्पष्ट हो जाता है। रामकृष्णादि ब्रह्मरुप तो मैं ही हूँ - वे हमारी लहर हैं ऐसा मानने वाले आधुनिक वेदांती वे अत्यंत पापी कहे गयें हैं। वे मर कर नरक में पडेंगे। (अर्थात् रामकृष्णादि को वेदांती लोग भगवान नहीं मानते)। लो. ९५ में रामकृष्णादिक जो भगवान के अवतार है, उनकी कथा सुनने से तो भक्ति उत्पन्न होती है । लो-११ में पुरुषोत्तम नारायण के अलांवा अन्य जो शिव ब्रह्मादिक देवता है उनका मोक्ष की इच्छावाले ध्यान न करें, लेकिन पुरुषोत्तम नारायण की रामकृष्णादिक जो मूर्तियां है उनका ध्यान अवश्य करें। लो. १४ में अपने अक्षरधाम के विषय में सदा दिव्य आकार के रुप में विराजमान रहते है, सभी अवतार उन्हीं के है, उन्हीं पुरुषोत्तम नारायण की उपासना करनी चाहिए।

लो.०१८ में वही भगवान मत्स्य कच्छपादिक तथा रामकृष्णादिक रुप में कार्य के हेतु से रुप को धारण करते हैं। ये सभी अवतार अनंत शक्ति से संपन्न होते हैं।

पं.-२ में सभी से परे जो पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण वही

वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध के रुप में होते हैं तथा रामकृष्णादिक अवतार धारण करते हैं। (यहाँ पर वासुदेवादिक तथा रामकृष्णादिक को अलग कहा है)

पं. ४ में ब्रह्मा, विष्णु, शिव तो भगवान पुरुषोत्तम की भजन करते हैं तथा उन्हीं की आज्ञा में रहते हैं। पं.७ में, जो पुरुषोत्तम नारायण है वही विशेष कार्य हेतु पुरुष, विराट, प्रह्मादि, नारद, सनकादिक के रुप में दृष्ट होते हैं। वही भगवान रामकृष्णादिक मूर्तियों को धारण करते हैं। ग.म. १४ वें अक्षरातीत जो पुरुषोत्तम है वही सभी अवतार के कारण हैं। सभी अवतार पुरुषोत्तम नारायण में से प्रगट होते हैं। पुरुषोत्तम नारायण में विलीन भी हो जाते हैं। वही भगवान रामकृष्णादिक रुप में अपनी इच्छा से जीवों के कल्याणार्थ प्रत्येक युग में प्रगट होते हैं। ग.म. ४२ में पुरुषोत्तम भगवान जिस ब्रह्मांड में जिस रुप के प्रकाश की आवश्यकता होती है वे अक्षरधाम में रहकर प्रकाशित होते हैं।

ग.म. ६५ में जीव के कल्याण हेतु भगवान के रामकृष्णादिक अवतार होते हैं । अमदावाद-४ श्री पुरुषोत्तम नारायण प्रथम धर्मदेव से तथा मूर्ति से श्री नरनारायणदेव के रुप में प्रगट होकर बदरिकाश्रम में तप करते हैं । वही नरनारायणदेव मत्स्य-कच्छपादिक अवतार धारण करके जीव का देहाभिमान त्याग कराते हैं तथा ब्रह्म अभिमान को ग्रहण कराकर अपनी शरीर को अन्य शरीर के समान दिखाते हैं। नरनारायण सभी अवतार के कारण है। ॥अमदावाद-६॥ इस सत्संग में जो भगवान बिराजते हैं, उन्हीं भगवान में से सभी अवतार हुए है, वे ही अवतारी है। सभी अवतार के कारण है। ऐसा जिस में निश्चय होगा वह कभी डिग नहीं सकता ? इसीलिये हमने श्री नरनारायणदेव को अपना रुप मानकर सर्व प्रथम श्रीनगर में प्रतिष्ठित किया है। इसलिये इन नरनारायण देव तथा ग्मुझ में थोडा भी भेद नहीं। ब्रह्माधाम के निवासी श्री नरनारायणदेव ही है । अमदावाद-७ प्रत्यक्ष श्री नरनारायणदेव की कृपा से (करुणा से) मुझ में जो कुछ है - वह है, इसके अलांवा अहं भाव स्वयं से आने नहीं देना चाहिए।

असलाली-१ में रामकृष्णादिक भगवान के अनंत अवतार को जो अंशमात्र जानता है वह बड़ी भूल कही जायेगी।

जेतलपुर-५ में हम वारंवार श्री नरनारायणदेव का मुख्य पना लाते है, उसका एक ही कारण है वह यह कि श्री कृष्ण पुरुषोत्तम अक्षरधाम के धामी जो श्री नरनारयणदेव हैं वे ही इस सभा में नित्य बिराजते हैं। उसी रुप को अर्थात् हमारे रुप को लाखो रुपये खर्च करके शिखरी मंदिर में अमदावाद की भूमि पर श्री नरनारायणदेव की मूर्ति के रुप में प्रतिष्ठित किया हूँ। ग.अंत्य ३१ वें में भगवान के ध्यान के विषय में - जो पुरुषोत्तम भगवान की आकृति है उसी में से भगवान अवतार धारण करते हैं । ग. अंत्य ३६ में पुरुषोत्तम भगवान के ब्रह्मज्योति समूह को साकार मूर्ति के रुप में समझना चाहिए । उन्हीं के सभी अवतार है, ऐसा समझकर प्रत्यक्ष भगवान का आश्रय ग्रहण करना चाहिए। ॥ अंत्य ३८ ॥ में पुरुषोत्तम भगवान अक्षरादिक सभी के नियंता है। ईश्वर के ईश्वर है, सभी कारण के कारण है। सर्वोपरि है, सभी अवतार के अवतारी है। इन भगवान के पहले भी बहुत सारे अवतार हुये हैं। वे सभी अवतार नमस्कार करने के योग्य है लेकिन पूजन के योग्य नहीं है।

इन सभी प्रमाणों से यह स्पष्ट होता है कि विराटादि जो सृष्टि के कार्य हेतु अवतार हुये हैं वे सभी अवतार की संज्ञा समझनी चाहिए। भेद - न रखने पर स्वरुप द्रोह होगा । अपने अवतार को जानकर श्रीजी महाराजने नरनारायण - लक्ष्मीनारायण इत्यादि अवतारों के स्वरुपों की स्वहाथों से स्थापना की। गुरु मंत्र दीक्षा, जन्मोत्सव, जन्माष्टमी इत्यादि व्रतोत्सव की व्यवस्था की। इस लिये ग.म. ९ में अवतार का वचन देकर अपने मंदिरों में श्री नरनारायणदेव तथा लक्ष्मीनारायण देव इत्यादि देवों की स्थापना किये इसलिये भेद मानने में द्रोह होगा। क्योंकि सर्वोपरि का गूढ संकल्प सर्वोपरि ही होता है। वचनामृत से श्रेष्ठ कोई प्रमाण नहीं मानना।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का दिशा सूचक आशीर्वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर का पाटोत्सव ता. ८-३-२०१४ : घनश्याम महाराज की प्रतिष्ठा हुई, जिसे देखते देखते ९ वर्ष बीत गया। इस अवसर पर मंदिर के संपर्क में बहुत सारे लोग आये। दर्शन से तथा सेवा से सभी का भला होता है। इसलिए महाराज ने मंदिरो का निर्माण करवाया। शुद्ध उपासना हो इसलिये भी मंदिर की स्थापना हुई। उपासना के विषय में लोग आजकल अपनी बुद्धि को आगे करके अन्य को भी गलत मार्ग पर ले जाते हैं। शिक्षापत्री वचनामृत में जो महाराजने आज्ञा की है उसके ऊपर भी अपनी वाणी द्वारा अर्थ घटन करके कहते हैं कि श्रीजी महाराज सर्वोपरि तो हैं ही लेकिन श्री नरनारायणदेव या लक्ष्मीनारायणदेव अथवा गोपीनाथजी महाराजकी अपेक्षा अन्य हैं। श्री नरनारायणदेव को मानने से तो केवल बदरिकाश्रम में ही जाया जासकता है, इसी तरह अन्य स्वरुपों के मानने से दूसरे धामों में जा सकते है परंतु अक्षरधाम में तो नहीं जाया जाता है। ऐसा जो कहता है उसे नर्क में भी स्थान नहीं मिलेगा। ऐसे लोग नि:शुल्क कैसेट भी बांटते हैं। नि:शुल्क वस्तु सभी को अच्छी लगती है। नि:शुल्क की सभी वस्तु अच्छी नहीं होती। कितनों को तो ऐसा होता है कि लाइये सुने तो सही। अरे भाई ? इस प्रकार से सुनने में कोई फायदा नहीं है। शिक्षापत्री तथा वचनामृत महाराजकी परावाणी है। इसके अलांवा जो व्यक्ति कुछ नया करना चाहता है, उससे सदा सतर्क रहना चाहिये। वचनामृत में हमें अधिक समझ में भले न पडे लेकिन परंपरा को कोइना नहीं चाहिये। एक भाई मेरे पास आकर चतुराई की बात कर रहा था कि महाराज का समय ऐसा था जिससे वे कुछ कर नहीं शके। महाराज सर्वोपरि है फिर भी अन्य स्वरुपों को प्रतिष्ठित करना पड़ा। मैने कहा महाराज न किये हों तो आप को कर देना चाहिए। महाराज अपना स्वरुप समझकर श्री

नरनारायणदेवों की प्रतिष्ठा किये थे । माला तो ''स्वामिनारायण'' की करते हैं । कौन ऐसा है जो नरनारायण या लक्ष्मीनारायण की माला करता है। परंतु महाराजने जिन देवों की प्रतिष्ठी की है उनकी उपासना प्रेम-श्रद्धा-भक्ति पूर्वक करनी चाहिए।

हम महाराज से मांगे ते क्या मांगे ? धन, पुत्र, संपत्ति, इत्यादि कोई वात नहीं मांगियेगा । कोई बात नहीं, दूसरे से मांगने की अपेक्षा महाराज से मांगना उत्तम है। एक भाई ऐसा कह रहा था कि जब मैं दर्शन करने जाता हूं तब महाराज से १ लाख रुपये मांगता हूँ। मैंने कहा कि आप गरीब हैं क्यों एक ही लाख मांगते हैं ? करोड मांगलीजिए । जब मांगना ही है तो कम क्यों मांगना। हो सकता है महाराज प्रसन्न होकर आपकी मांग पूरा कर दें। महाराज के पास मांगने की सच्ची वस्तु है कुसंग से रक्षा। इस कुसंग में दश इन्द्रियां तथा इग्यारहवां मन ये यथार्थ रुप से कुसंगी हैं। इन्द्रियों का कुसंग क्या है । तो भगवान में मन न लगे और इन्द्रियां इधर उधर भटकती रहें। यह सुनना है, - यह देखना है, वहाँ जाना है.... इत्यादि इस में से कुछ भी काम का न हो। मंदिर में आवे तो भी मन इधर इधर भटकता ही रहता है। जागृत अवस्था में तथा स्वप्न अवस्था में दील्ही की गद्दी पर कौन बैठेगा इसका विचार आता है। जो भी आयेगा वह हमारा कुछ करनेवाला नहीं है । स्वप्न में भी कभी भगवान का दर्शन तो होता ही नहीं है । तिलक चन्दन मस्तक पर बाहर से करते हैं परंतु भीतर से तो होता ही नहीं । मंदिर में आकर मात्र महाराज का दर्शन ही नहीं करते बल्कि अगल बगलका भी ध्यान रखते हैं, कौन क्या करता है ? बगल वाला क्या कर रहा है ? सभी लोग अपनी प्रकृति के अनुसार वर्तन करते हैं। मात्र महाराज ही प्रकृति के अधीन नही हैं। यहि हमलोग भी प्रकृति से ऊपर होते तो अक्षरधाम में स्वतंत्र ढंग से जाते और आते । यहाँ पर आकर दुकान का काम पुरा करके फिर अक्षरधाम चले जाते। आपको कभी गुस्सा आता है और हमें भी आता है लेकिन हम दोनो के हेतु अलग है। हमें गुस्सा तब आता है जब आपके सिंहासन में कुछ नया देखते हैं।

अपने नंद संत तथा समकालीन भक्त कितना श्रम किये हैं। कितना संघर्ष किये हैं। उसके बाद आज हम सभी सुख से बैठे हैं। उस समय रोड़ पर निकलते तब स्वामिनारायण स्वामिनारायण बोलते पर सभी लोग गाली देते, धूल फेंकते, स्वयं महाराज की बात करें तो पेशवा सरकार के सूबा महाराज को मारने के लिये खौलते तेल की टंकी के ऊपर गद्दी-तकिया रखवाकर उसके ऊपर बैठने की बात की थी। महाराज तो अंतर्यामी हैं वे अपनी हाथ की घड़ी से गद्दी पर भार दिये कि पेशवा की पोल खुल गयी। जो संघर्ष करता है उसे फल मिलता है । वह मजबूत बनता है । बाप श्रम करके उपार्जित संपत्ति को बेटे को देते समय यह कहता है कि इसकी रक्षा करोंगे तो भी अच्छा। क्योंकि बाप को यह खबर है कि बेटे को सबकुछ तैयार मिला है इसलिये कीमत नहीं होगी।

कोश के भीतर दो कीटको एक भाई देख रहा था। उसमें एक थोड़े दिन में पंख आने पर उड गया । परंतु दूसरे को कुछ समय और लगा । बाहर आने के लिये संघर्ष कर रहा था। पहला भाई का धीरज नहीं रहा उसने ब्लेड से थोडा चीरा किया, जिससे वह बाहर तो आगया लेकिन रक्त से उसके पंख फंस गये जिससे वह उड़ नहीं सका । इतने में एक पक्षी आया और अपने चोंच में भरकर ले गया और भक्षण कर लिया। सत्संग में भी जो धीरे धीरे तैयार होते है वे मजबूत होते हैं । उनकी निष्ठा परिपक्वहोती है उन्हें कोई आकर बाहर नहीं लेजा सकता।

शास्त्रों की कथा-पारायण होती है उसके प्रारंभ में

श्रोता वक्ता के लक्षण घटते हैं। कोई वक्ता अपने लक्षणों को नहीं बताता यदि बता में तो ९९% प्रतिशत वक्ता फेल हो जाय। वक्ता का सच्चा लक्षण यह है कि महाराज का दृढ आश्रय होना चाहिये। ऐसे वक्ता के मुख से कथा श्रवण की जाय तो फलदायी होती है। अन्यथा कोई फल नहीं। आप टी.वी. के चेनल में कितनी कथा देखते रहते हैं। परंतु उस कथा को सुनकर कोई सत्संगी नहीं होता। ऐसी कथा कुछ समय तक अच्छी लगती है। प्रसंशा होती है - संगीत अच्छा है, कंठ अच्छा है। देखाव अच्छा है। परंतु वक्ता का भगवान में दृढ आश्रय न होने से श्रवण करने वाले के हृदय में कथा उतरती नहीं है। वचनामृत में महाराजने कहा कि ऐसा कौन सा साधन है जिसके सिद्ध होजाने पर अन्य भी सिद्ध हो जाता है। इसका उत्तर महाराजने ही दिया कि जिसे भगवान का दृढ आश्रय हो मात्र इसके सिद्ध होजाने पर अन्य सभी साधन सिद्ध होजाते हैं।

निर्गुणदासजी स्वामी को भगवान का दृढ आश्रय है, भगवान सिवाय उनसे अन्य कोई वात सुनने के लिये नही मिलेगी। वे एक निडर वक्ता हैं। कडवा सदा सत्य ही होता है। स्वामी की कथा कुछ ऐसी ही है, इनकी कथा आप अवश्य सुने। कितने लोग एक दूसरे की प्रशंसा ही करते रहते हैं - आप तो दादा खाचर की तरह है, पर्वतभाई की तरह हैं। इसके अलांवा सामने वाला कहता है कि आपतो ब्रह्मानंद स्वामी की तरह अथवा मुक्तानंद स्वामी की तरह है।इस तरह एक दूसरे की प्रशंसा करके अलग होते हैं। अरे भाई ? ब्रह्मानंद स्वामी। दादा खाचर की बराबरी करके उनका अपमान क्यों करते हैं। उनके जैसा कौन हो सकता है ? वे स्यवम् एक थे। एक भाई को ऐसी टेव पड गयी थी कि मंदिर में पांच-दश हजार का दान करे तो नाम में फला-फलाभाई ऊर्फ दादा खाचर ! रसीद फाड़ने वाला व्यक्ति कि ऐसा नहीं लिखा जकता है, तो उत्तर मिलता कि हमें दान नहीं करना है। हमें संप्रदायमें सभी दादा खाचर की तरह देखते हैं : आप हमें पहचानते नहीं।आज कल वह भी कहीं दिखाई नहीं देता। भगवान जाने कहाँ अदृश्य हो गया। दादा खाचर का नाम अमर है। उस भाई का नाम कहीं भी श्रवण नहीं होता। दादा खाचरने अपनी धन सम्पत्ति दरबार गढ इत्यादि सब कुछ महाराज को अर्पण कर दिया। इस का मतलब कि महाराज उनकी बहुत याग करते रहे होंगे ऐसा नहीं। महाराज उन्हें इसलिये याद करते थे कि वे महाराज के मन थे। दादा को शिक्षापत्री की जरुरत नहीं थी। महाराज की आंख देखकर दादा जानते थे कि महाराज को क्या अच्छा लगता है और क्या नहीं। वैसा ही वे वर्तन करते थे।

भक्त बनना शूरवीर का काम है। कायर का काम नहीं। कारण यह कि भगवान के साथ जैसे-जैसे संबंधजुडता जाय वैसे बैसे संसार छूटता जाना चाहिये। आप देखियेगा कि धंधा-व्यापार, सगे-संबंदी, मित्र के यहाँ कथा-पारायण होती हो आप उनसे कहें कि कथा सुनने आना है, वे उत्तर देगे कि आप जाइये। मुझे कुछ काम के लिये जाना है।

षष्टि पूर्ति आदिक महामहोत्सव में बापूनगर के आप सभी छोटे-बड़े हरिभक्तों ने सेवा की थी, आगामी श्री नरनरायणदेव के पाटोत्सव में भी आप लोग ही सबकुछ करने वाले हैं। इतना कहकर प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

पता परिवर्तन के विषय में

श्री स्वामिनारायण मासिक के कोई भी सदस्य अपने पते में फेरफार करते हैं तो मो. फोन में सूचना न दें, पत्र द्वारा अपने पते की जानकारी दें।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

उद्धवावतार समर्थ गुरु श्री रामानन्द स्वामीने अपनी गद्दी के ऊपर नीलकंठ वर्णी को सं. १८१२ कार्तिक शुक्ल-११ को बैठाये तथा संप्रदाय की धुरा उनके हाथ में अर्पण किये, उस समय के महोत्सव का वर्णन इतना सुंदर था कि आचार्यश्री विहारीलालजी महाराजश्रीने हरिलीलामृत में उनके लिये विश्राम (कलश-४ वि. २० से ३०) का निरुपण किया है। उस समय सभी देवता, अवतार, चारो वेद, अष्टसिद्धि इत्यादि वहाँ पर मूर्तिमान होकर पधारी थी।

अक्षरधाम के अधिपति जिसलिये अवतार थारण किये थे, उनका यह प्रथम चरण था। इस महोत्सव में जिस तंबू के नीचे नीलकंठ वर्णी विराजमान थे। उसके नीचे चारो वेद प्रत्यक्ष रुप से उपस्थित होकर यज्ञ में आहुति दिये थे। जिसके ऊपर वर्णीने अपने अन्नवस्त्र का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेलिया था। रामानंद स्वामीने स्वयं वर्णी का हाथ पकड़कर सिंहासन के ऊपर बैठाकर आशीर्वाद का अभिषेक किया था। उस प्रसादी के चादर को म्युजियम में दर्शनार्थ रखा गया है। वैज्ञानिक ढंग से रखरखाव की उत्तम व्यवस्था की गयी है। जिसका दर्शन श्री स्वामिनारायण म्युजियम के होल नं. ७ में किया जा सकता है। प्रत्येक हरिभक्त उसका दर्शन करके अपने जीवन के अलभ्य लाभ को चरितार्थ करें। इसमे सुख समृद्धि समाई हुई है।

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।
मोबाईल में टाईप करें : cf 270930 टाईप करें 56789
नम्बर पर : S.M.S. करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : cf टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अप्रैल-२०१४

१०,००,०००/-	प.पू. बड़े महाराजश्री के ७० वें प्रागटचोत्सव प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण मंदिर, मांडवी (कच्छ) के हरिभक्तों की तरफ से प्राप्त चरण भेंट की रकम श्री स्वामिनारायण म्युझियम में अर्पण कर दिये।
१,५०,०००/-	अ.नि. विठ्ठलभाई सोमचंद शाह (वकीलश्री) कृते राजेशभाई भगवतभाई तथा हरिवदनभाई, हर्षत, जयश्री बी. शाह अमदावाद।
१,००,०००/-	एक हरिभक्त बहन - अमदावाद।
१,००,०००/-	श्वेताबहन गंगाराम पटेल कृते डॉ. गंगाराम पटेल, घाटलोडीया
१,००,०००/-	बालमुकुन्द गंगारामभाई पटेल कृते डॉ. गंगाराम पटेल - घाटलोडीया
५१,०००/-	अ.नि. जटाशंकर पोपटलाल शाह परिवार अंबावाडी, कृते जगदीशबाई शाह
५१,०००/-	महेशकुमार विठ्ठलदास पटेल (वडुवाला) कलोल
५१,०००/-	सोनी चुनीलाल दुर्लभजीभाई कृते जयेन्द्रभाई सोनी
३१,०००/-	लालजी शामजी गामी केरा (कच्छ)
२५,०००/-	श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) मांडवी (कच्छ) कृते सां.यो. रामबाई की तरफ से
२१,०००/-	सुभाषभाई वेलजीभाई चावडा कृते धवल सुभाषभाई चावडा
१८,०००/-	जितेन व्रजलाल वघासीया, नारणपुरा
१५,०००/-	भूपतभाई नानजीभाई सिंगाणा - बापूनगर कृते आदित्य, आदिती, हार्वी, हीर
११,०००/-	भूपेन्द्रभाई रतीलाल पटेल, अमदावाद।
११,०००/-	धीरजभाई करशनदास पटेल, सोला रोड।
११,०००/-	बाबूभाई पोपटभाई सींगाणा, बापूनगर।
१०,०००/-	घनश्याम इन्जिनीयरिंग इन्डस्ट्रीझ, बोपल कृते मीना बहन के. जोषी।
१०,०००/-	हरजीवनभाई करशनदास पटेल, सायन्स सीटी, अमदावाद
९,२००/-	श्री स्वामिनारायण कर्मशक्ति नवा नरोडा, बापुनगर।
५,१००/-	वर्मी जेम्स - ऋषि जेम्स, मेतपुर खंभात
५,०००/-	नवीनचंद्र रमणलाल भावसार, नवा वाडज, कृते अमीत नवीनचंद्र भावसार
५,०००/-	मयंक विनोदचंद्र भीमाणी, लंडन कृते चंद्रिकाबहन, सेजल, स्वाति, तृप्ति, किंजल।
५,०००/-	कमलेशभाई एच. शाह उस्मानपुरा (नेशनल इन्स्युरेन्स कंपनी)
५,०००/-	पटेल रंजनबहन भरतभाई गांधीनगर।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अप्रैल-२०१४)

ता. ३-४-१४	महेशभाई विठ्ठलभाई पटेल वडुवाला (वर्तमान केनेडा) वीजा मिलने के निमित्ते
ता. ८-४-१४	राधेश मनजीभाई भुडीया - यु.के.
ता. ९-४-१४	भूपेन्द्रभाई रतिलाल पटेल (दाणी लीमडा) हा. सेटेलाईट
ता. १०-४-१४	सुरेशभाई अमीन (विरसदवाला) न्युजीलेन्ड
ता. १४-४-१४	नारण भीमजी हालाई (सुखपरवाला) (लंडन-कार्डिफ)
ता. १९-४-१४	धर्मेन्द्रभाई आर. पटेल कृते आंगन, हर्षिल तथा दर्शनाबहन (सेटेलाईट)

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

श्रीहरि का अलौकिक ऐश्वर्य

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

संसार में हमें जो भी सुख मिला है वह भगवान की कृपा से मिला है, ऐसी दृढ भावना होनी चाहिये । मानव की ऐसी प्रकृति है कि जो भी कर्ता है वह अभिमान पूर्वक कर्ता है । मैने यह काम किया, इसलिये इसमें इतना फांयदा हुआ । मानव मात्र ऐसा मानता है कि मेरी मेहनत से, मेरी बुद्धि से, मेरे परिश्रम से इतना फायदा हुआ है । यदि भक्त होगा तो उसके हृदय में होगा कि मुझे जो भी मिला है वह प्रभु की कृपा से मिला है । जगत तथा भगत में यही अन्तर है । श्रीजी महाराज तथा संत एक साथ थे, उस समय एक प्रसंग बना । प्रभु ठन्ढी में विचरण कर रहे थे । माणकी घोडी को पानी पिलाने के लिये किसी किसान के खेत में गये । वह किसान गेहूँ वोया था । पूरा खेत गेहूँ की बाल से लहरा रहा था, जिसे देखकर महाराजने कहा कि पटेल ? आपके खेत में गेहूँ की फसल अच्छी हुई है । यह सुनकर पटेलने प्रवचन चालू कर दिया, क्यों नहो, हमने खूब मेहनत किया है, रात दिन एक कर दिया है, खेत को खूब जोता है, खाद डाला है । इसके बाद आप इस रुप में देख रहे हैं । रात भर इस ठन्ढी में सिचाई का काम किया है । कूए से पानी निकाल - निकाल कर सिचाई किया है तब यह सब कुछ दिखाई दे रहा है ।

एक महीने के बाद महाराज उसी रास्ते से जा रहे थे । किसान गेहूँ को काटकर उसी खेत में रखा था । उसे देखकर भगवान स्वामिनारायणने पूछा कि अरे पटेल । यह क्या ? गेहूँ के दाने बढे नही । लेंढा जैसे ही रह गये । सभी एकठ्ठा करके फेंक दिये हो ? यह सुनकर पटेलने उत्तर दिया कि भगवान ने ही ऐसा किया है, सभी निरर्थक हो गया । परिश्रम पानी में चला गया ।

पटेल का उत्तर सुनगर महाराज संतो से तथा भक्तों से कहते हैं कि देखो यह जगत दृष्टि है, यदि सुख मिलता है तो मनुष्य ऐसा मानता है कि मेरे पुरुषार्थ का यह फल है, जब दुःख आता है तो मनुष्य मानता है कि भगवानने दिया है । जो सच्चा भक्त होता है वह ऐसा नहीं मानता ? जिन्हें भगवान का दृढ आश्रय, निश्चय हो गया है वे ऐसा मानते हैं कि सुख या दुःख भगवान की इच्छा से होता है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

हुं हरिनो हरिमम रक्षक ए भरोंसो जाय नहीं ।
हरिजे करशे ते मम हितनुं एविश्वास तजाय नहीं ।

ऐसे भक्तों को भगवान के ऊपर दृढ विश्वास होता है । जिस तरह गायों के पालक को अपने गायों की रक्षा का ध्यान रहता है, जिस तरह माता को अपने पुत्र का ध्यान रहता है । माता की मनोवृत्ति अपने बालक में ही होती है । ग्राम्य मातायें अपने बालक को घर में सुताकर खेत में काम करने जाती हैं लेकिन उनका मन निरंतर अपने बालक पर रहता है उसी तरह हे प्रभु ! आप हम सभी का अखंड ध्यान रखते हैं ।

भगवान किसी को दुःखी नहीं करते हैं । हमारी किसी प्रकार की हानि नहीं होने देते ऐसा विश्वास करके भगवान की सदा भजन करते रहना चाहिये । यह सदा ध्यान रखना चाहिये कि भगवान की कृपा ही सर्वोपरि है ।

•

भक्त रक्षक भगवान

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

कोई कहे, भगवान का स्वरुप खड़ा क्यो हैं ? इसका उत्तर मिलेगा भक्तों की रक्षा के लिये । कोई कहे कि भगवान माला क्यों धारण करते हैं ? उत्तर मिलेगा भक्तों की रक्षा के लिये । भगवान का ऐश्वर्य कैसा होगा ? प्रताप कैसा होगा ? उत्तर होगा कि भक्तों के दुःख को दूर कर सके ऐसा है । संकट दुःख दारिद्रय को दूर करके आनंद प्रदान करने वाला प्रताप होता है । इसी पर एक प्रभु का चरित्र पठन करते हैं ।

काशीदास नाम का एक भक्त था । वह बोचासण गाँव का था । काशीदासभाई के घर में अच्छा सत्संग होता था । नित्यप्रातः सभी एक साथ भगवान की आरती

करते थे । कथा-शास्त्र पठन करके सभी अपने कार्य में लग जाते थे । आरती-पूजा-कथा इत्यादि के विना कोई पानी नहीं पीता था ।

एक दिन प्रातः काल काशीदासभाई तथा उनके परिवार के लोग आरती कर रहे थे, इतने में सरकार के आदमी, हाथ में हथकड़ी लेकर आये । काशीदासभाई ? हम सभी आपको बन्दी बनाने आये हैं । हाथ में तथा पैर में बेड़ी बांधदिये । इसके पीछे एक ही कारण था कि काशीदासभाई किसी व्यापारी से रुपये लिये थे । वह बहुत समय से दिये नहीं थे । इस लिये व्यापारी ने सरकार में पत्र लिखकर काशीदासभाई के हाथ-पैर में बेडी बांधकर जेल में डलवा दिया ।

उसी समय गढपुर में उत्सव चल रहा था । काशीदास की माता तथा परिवार के सभी सदस्य गढपुर दर्शन के लिये गये । काशीदास कैद में थे इसलिये जा नहीं सके । जेल में बैठे-बैठे बडे उदास थे । हृदय से महाराजकी अर्चना करते हुये कहने लगे कि हे महाराज ! आपकी आज्ञा का लोप किया जिससे इसबार उत्सव का लाभ नहीं मिला । हे महाराज ! यदि कर्ज नहीं लिये होते तो आपकी अमृत वाणी का तथा दर्शन का लाभ मिला होता । इस तरह जेल में उदास रहते थे । प्रतिदिन प्रातः काल काशीदास-सिपाहियों के साथ नदी में नहाने जाते । बाद में सिपाही उन्हें जेल में बन्द कर देते थे ।

एक दिन काशीदासभाई हाथ में पानी लेकर कहने लगे कि हे महाराज ! आपही प्रहलाद की रक्षा करने वाले हो, आपही गज की ग्राह से रक्षा किये हो, आपही सुधन्वा की गरम तेल से रक्षा किये हैं । इस तरह संकल्प करके जल को नीचे गिरा दिये और पानी में डुबकी मारे कि दश गाँव जितने दूर जाकर निकले । पैर में बांधी हुई बेणी भी छूट गयी । सिपाही वापस आये और अधिकारी को जानकारी दिये कि काशीदास नदी में डूब गये । उधर काशीदास दशगाँव दूर निकलकर गढडा की तरफ चल दिये । महाराज गढपुर में ही विराजमान थे । काशीदास की माता को बुलाकर कहे कि आपके काशीदास अभी आनेवाले हैं । यह सुनकर काशीदास की मां ने कहा कि हे महाराज ? हमारा काशीदास तो जेल में बन्द है । कैसे आयेगा ? महाराज ने कहा कि अभी आयेगा । ऐसी वात कहती रहे थे कि काशीदास आकर महाराज को दंडवत प्रणाम किया । महाराज उनकी माता से कहा कि काशीदास दृढ प्रतिज्ञ हैं या नहीं ? वह माताजी बहुत आनंदित हो उठी । बाद में काशीदास गढपुर में १० दिन तक रहे । महाराजने आज्ञा की कि अब आप लोग घर जाइये । काशीदासने कहा कि हे महाराज ! हम वहाँ जायेंगे पुलिस हमें देखेगी तो पुनः कैद में रख देगी । महाराज ने कहा कि अब आप का कोई नाम नहीं लेगा । अब आप सुखपूर्वक घर जाइये ।

काशीदास के साथ सभी परिवार के सदस्य घर गये । जिस व्यापारी ने काशीदास को बन्द करवाया था वह देखा तो पुनः सरकार में अर्जी की कि काशीदास पुनः आगया है । इसे पकड़ कर पुनः जेल में कैद कीजिये । तब सरकार के आदमी पकड़कर सरकार के पास ले गये । सरकारने पूछा कि तुम स्नान करने गये थे तो पानी के भीतर से कैसे अदृश्य हो गये ? तब काशीदासने कहा कि हमें कोई खबर नहीं मैंने डुबकी मारी तो दश गाँव जितनी दूरी पर जाकर निकला । मेरे पैर की बेड़ी भी पैर में नही थी । अब सरकार की जो इच्छा हो वह करे । यह सुनकर सरकार ने कहा कि इनकी रक्षा स्वयं भगवानने की है । काशीदास के विपक्षी से कहा गया कि काशीदास के पास आपका कर्ज था । अब वे काशीदास ये नहीं है ? इन्हें परमेश्वर ने दूसरा जन्म दिया है, इन की रक्षा की है । इस लिये इनसे आप लोग कुछ भी मांग नहीं सकते । इस तरह महाराजने काशीदास के उपर खूब कृपा की ।

काशीभाई ने नियम लिया कि महाराज जैसे रखेंगे वैसे हम रहेंगे । किसी से उधार लेंगे नहीं । नियमित भगवान की प्रातः आरती, प्रार्थना, शास्त्र वांचन इत्यादि सत्कर्म करने से महाराज ने हमारी रक्षा की है । केवल कैद खाने से छुडवाये नहीं अपितु संसार के कैद खाने से भी मुक्त कर दिये । इस तरह के वे दृढ भक्त हुए ।

सज्जनो ! भक्त की रक्षा करने के लिये भगवान ऐश्वर्य को देखाते हैं । जीव में भजन की सेवा की यदि चाहना रहेगी तो भगवान अवश्य अपने साथ रहेगा ।

(हरिलीलावार्ता विवेक वार्ता नं. ५ आधारित)

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"शांति और आनंदका आधार संयम तथा संतोष है"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

संसार का त्याग नही करना है, सब से पहले निबिद्ध कर्म का त्याग करना है। पंचवर्तमान का पालन करना, नियत कर्म करना, साधारण कर्म का पालन - ये सभी पहले करना होगा। जो निषिद्ध कर्म का त्याग किया हो उसके हाथ से खराब कर्म नहीं होता। ज्ञान में या अज्ञान में खराब कर्म हो जाय तो इतनी अधिक अशांति होती है, जिस दिन खराब कर्म हो जाता है उस दिन खाली रहने पर अशांति का अनुभव होने लगता है। डिप्रेशन हो जाता है। असत् कर्म का प्राकृतिक संकेत मिलने लगता है। जो अज्ञान में पापा चरण करते हैं उन्हें परमात्मा संकेत देते हैं। सभी को ऐसा नही होता जिन लोगों को प्रतिदिन की आदत हो जाती है निंदा करने की उन्हें कभी अशांति लगती है ? तब किसी की निंदा नहीं करे उस समय कुछ खराब कार्य हो जाय तो परमात्मा के पास जाकर क्षमा याचना कर लेनी चाहिये। शरीर से भी कोई पाप न हो इस का सदा ख्याल रहना चाहिये । अति लोभ अतिमोह को भी शारीरिक पाप कहा गया है। इच्छा (काननां) के वश होकर आदमी अपनी इच्छापूर्ति के लिये शरीर की क्षमता से अधिक काम करता है।

जो व्यक्ति शारीरिक क्षमता से अधिक किसी से काम कराता है वह भी हिंसा कही जायेगी। पाप कहा जायेगा। विवेक पूर्वक तथा मर्यादा के साथ पांचज्ञानेन्द्रिय तथा पांच कर्मेन्द्रियों का उपयोग करें तो कोई खराब नहीं कहा जायेगा। मात्र ससार का भोग एक मात्र लक्ष्य जब बन जाता है तब अपना लक्ष्य बाधित हो जाता है। इसी तरह मानसिक हिंसा भी कही गयी है। जब मन में खराब विचार आने लगे तो उसे मानसिक हिंसा कहेंगे। जैसा विचार आयेगा वैसा व्यक्ति वर्तन करेगा। प्रेम से नही बोला जायेगा, श्रद्धा नहीं रहेगी, खराब बोला जायेगा, जैसी मन में ग्रन्थि बन गयी है वैसा ही वह बोलेगा। बाद में व्यक्ति वैसा कर्म भी करेगा। कर्म से तथा वचन से किसी को दुःख पहुँचाया नही जाय तो भी मन से विचार से हिंसा का भाव आयेगा तो उसका अशर शरीर पर अवश्य पड़ेगा। अतिलोभ, अति मोह तथा अति प्रगति करने का भी मोह होता है। इन सभी से दूर रहकर शुभ वाणीका व्यवहार करना चाहिये। मन पर संयम रखकर आनंदपूर्वक जीवन यापन किया जाय तो जीवन में शांति का अनुभव होगा। उससे भी अधिक शांति का अनुभव करना हो तो त्याग पूर्वक जीवन होना चाहिये। शांति और आनंद का आधार संयम तथा संतोष है। शारीरिक अत्याचार, अतिशय विषय भोग, अतिशय तप, अतिदमन नही करना चाहिये। क्योंकि शास्त्र में जो वस्तु मान्य न हो ऐसे व्रत-उपवास नही करना चाहिये। क्योंकि शास्त्र में जो वस्तु मान्य न हो ऐसे व्रत-उपवास नहीं करना चाहिये। शास्त्र में जो वस्तु मान्य न हो ऐसे व्रत-उपवास नहीं करना चाहिये। शास्त्र में जितना लिखा है उससे अधिक करने से भी फल नहीं मिलता। जितनी प्यास लगी हो उतना ही पानी पीया जाता है। अधिक पीने का परिणाम उल्टी इत्यादि है। शरीर का अन्याय होता है। संयमित जीवन जीकर उस शरीर का अच्छे कर्म में उपयोग हो इसका सदा ख्याल रखना चाहिए। सदा उत्तम मुमुक्षु बनना चाहिए। हम पूर्व जन्म में क्या थे ? कहां थे ? क्या करते थे ? यह सब याद नहीं है। अब आगे क्या करना है वह अपने हाथ में है। आत्मा का कभी नाश नहीं होता। सभी को सबका ज्ञान है फिर भी आसक्ति में पड़े रहते हैं। हमें जहाँ जाना है वह निश्चित हो तो कैसे भी साधन द्वारा जल्दी पहुँच जायेंगे। परंतु मन की दृढता हो या निश्चित कर लिया हो पहुंचना ही है तो लक्ष्य साध्य हो जायेगा। यदि मन में अस मंजस का भाव रहेगा या जांये या न जांये ऐसा भाव रहेगा तो पहुंचना संभव नहीं है चाहे जितने भी साधन बदलते रहें। विचार पक्का होगा तो जो भी साधन आपके पास होगा उसी से कार्य साध्य हो जायेगा। स्थान निश्चित होने पर सभी वस्तु साधन हो जायेगी। इस लिये संयमित जीवन जीने की दृढ प्रतिज्ञा करने वाला मुमुभु परमात्मा की कृपा का पात्र बनजागेया। और परमात्मा तक पहुंच भी जायेगा।

●

चारित्र्यवान जीवन
- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

अपनी महानता की इमारत चारित्र्य के पाया पर खड़ी होती है। करोडो ज्ञान के भंडार की अपेक्षा चुटकी भर का चारित्र्य श्रेष्ठ होता है। चारित्र्य अपना गहना है (अलंकार है) चारित्र्य निष्ठा से अपनी मानवता तथा नैतिकता से मूल्य में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य के विगड़ने पर दैनिक जीवन में थोडा कष्ट आता है। लेकिन चारित्र्य के विगड़ने पर अपना जीवन रुपी मकान खुल्ला हो जाता है। जीवन उत्तम हो लेकिन चारित्र्य न होतो खाक का कहा जायेगा। जिसके

जीवन में चारित्यरुपी संपत्ति हो वह सभी के हृदय में राज कर सकता है । इसीलिये बुद्धि शाली मनुष्य दुराचरण तथा अनीति का त्याग करके सदा चारित्र्य का रक्षण करता है । जिस तरह वरसात के पानी से जमीन में घास तथा वनस्पति उग निकलती है, उसी तरह चारित्र्य रुपी कोमल वाणी के प्रभाव से दुराचारी व्यक्ति भी भक्त बन जाता है । वाणी से बोलने में लोग शंका करेंगे, लेकिन कर्म द्वारा करके दिखाया जाय तो सभी स्वीकार करते हैं । जिन की कामेन्द्रिय तथा जीभ वशमें है वह उसकी तुलना परमेश्वर के साथ की जा सकती है।

हम एकांत में जैसा वर्तन करते है वही अपना चारित्र्य है। देश की महानता लंबाई - चौड़ाई से नहीं होती बल्कि देश की महानता देश के नागरिकों के चारित्र्य से होती है। मनुष्य की धार्मिकता भी उसके चारित्र्य से जानी जा सकती है।

चारित्र्य का निर्माण ज्ञान से होता है। यह ज्ञान शास्त्रों से लभ्य है। चारित्र्य निर्माण से अपना मनोबल बढता है। वह मनोबल अपने पास न हो तो अपनी लाख रुपये की मूल्यवान वाणी किसी के हृदय में नही उत्तार सकती। स्पर्श भी नही कर सकती। संसार में प्रगति का आधार स्तंभ केवल चारित्र्य है। अपने जीवनमें प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना सहज है, परंतु प्राप्त की गयी सफलता को बनाये रखना कठिन है। यह सफलता स्थायी रुप से बनी रहे उसके लिये उत्तम चारित्र्य की जरुरत होती है।

सर्व प्रथण चारित्र्य क्या है ? इसे समझना होगा - चारित्र्य का अर्थ होता है - सत्य, अहिंसा, प्रामाणिकता, निर्भयता, पवित्रता, दया, ब्रह्मचर्य, इत्यादि सर्व गुणों से युक्त, जीवन। संक्षिप्त में कहा जाय तो अपने भीतर विद्यमान सद्‌गुण । चारित्र्यवान का मतलब क्या हुआ ? चारित्र्यवान जीवन अर्थात् सर्वगुण संपन्न आचरण सहित जीवन। इस तरह चारित्र्य यह सद्‌गुण है, जबकि चारित्र्यवान जीवन, सद्‌गुणों से परिपूर्ण वर्तन चारित्र्य हो तो जीवन को चारित्र्यवान बनाया जासकता है। सर्वश्रेष्ठ बताने के लिये जीवन को चारित्र्य से निखारना पड़ता है।

जिस तरह शरीर के ऊपर आभूषण शोभा को प्राप्त करता है उसी तरह मनुष्य का जीवन चारित्र्य से सुशोभित हो उठता है। इसी लिये तो चारित्र्य को सबसे अधिक मूल्यवान आभूषण कहा गया है। चारित्र्य दृढ तथा मजबूत होगा तो ही महानता कही जायेगी। आज मनुष्य को अपने सभी कार्य चारित्र्यवान बनकर करने की जरुरत है तभी उसमें सफलता आयेगी वह उत्तरोत्तर वृद्धि कर सकेगा। आज की विषम परिस्थिति में चारित्र्य रक्षक बनेगा । आज के युग में संपत्ति, विद्वता, शिक्षण, खूब बढ गया है । इसी तरह भौतिक सुख की लालसा के लिये लोग अंधे की तरह दौड़ रहे हैं। जिस के लिये भ्रष्टाचार तथा अनैतिक कार्य लोग कर रहे हैं। इन सभी को रोकने की एकमात्र उपाय है ''चारित्र्य''।

भगवान स्वामिनारायण ने १८ वीं सदी के अंधकार युग में लाखों युवानों को चारित्र्यवान बनाया था । शांति की स्थापना की थी । चोर, डांकू, दुराचारी, पापाचारी, व्यभिचारी, मांस-मदिरा इत्यादि में सदा डूबे रहने वाले लोगों को चारित्र्यवान बनाकर सन्मार्ग पर चलाकर उन्हें भक्त बनाया था। जिस में जोबन पगी, तखोपगी, एभल खाचर, अभेसिंह, चोरों का सरदार वेराभाई, मंजो सुरु, जसका मलिया इत्यादि के नैतिक जीवनको उज्जवल किये थे।

मछियाव के मूलजी गोर तथा मयाराम भट्ट को एकांत में स्त्री का योग हुआ फिर भी, संयम-धर्म नष्ट नहीं होने दिया। इसी तरह शिवलाल शेठ को अपने घर में छ महीने से आई हुई नवयुवती बहन के मुख तक को नहीं देखा । भगवान स्वामिनारायण ने कैसा संयमी चारित्र्यवान समाज तैयार किया था। इस तरह श्रीजी महाराज १८ वीं सदी के वहम, व्यसन, कुरिवाज को दूर करके संत समाज के द्वारा सदाचारवाला सभी को किया था। भगवान स्वामिनारायण का यही भगीरथ कार्य आज उन्हीं के संत कर रहे हैं । चारित्र्यनिष्ठ बनने के लिये दो सद्‌गुणों की जरुरत होती है - (१) ब्रह्म चर्य (२) पारदर्शकता

(१) ब्रह्मचर्य : ब्रह्म में चलना, अर्थात् भगवान की मूर्ति में चलना, अर्थात् विचरण करना। इसका मतलब यह कि देह का भाव छोड़कर उन्हे ममत्व का भाव छोड़कर, देह सम्बन्धिजागतिक प्रपंच से अगल होके प्रभु में प्रीति रुपी चर्चा करना ही ब्रह्मचर्य है। भगवान ने ब्रह्मचर्य पालन के लिये एक विशिष्ट मर्यादा का निरुपण किया है जैसे - त्यागी वर्ग में आठ प्रकार से स्वीकार त्याग करना। जब कि गृहस्थ को परस्त्री का त्याग करना तथा व्रत के दिन स्वपत्नी का त्याग करना।

(२) पारदर्शकता : अर्थात् दंभ के विना, कपट के विना जीवन, गुजराती भाषा में एक कहावत है ''हाथी के दांत दिखाने वाले तथा खाने वाले अलग होत हैं।'' इसी तरह वर्तन के विषय में कथनी और करनी में फर्क हो तो पारदर्शकता नहीं कही जायेगी। जैसा अन्दर हो उस वर्तन को पारदर्शकता कहेंगे।

चारित्र्य निर्माण में पारदर्शकता ब्रह्मचर्य के बाद का एक महत्व का सद्‌गुण है। जि सतरह ब्रह्मचर्य आत्म निर्माण के लिये खूब जरुरी है, उसी तरह पारदर्शकता के लिये भी

अत्यन्त आवश्यक है।

अन्त में : नियमित सत्संग, आज्ञा पालन, सत्पुरुषों का समागम ही एक मात्र चारित्र्य बनाने में सहायक है। इससे जीवन रुपी दीप प्रज्ज्वलित बनता है। संतो के चारित्र्य का अनुसरण करने से जीवन चारित्र्यवान बनेगा। उनके जैसा जीवन चारित्र्यवान बने ऐसी प्रार्थना।

●

योग अर्थात् क्या ?

– सां.यो. कुंदनबा गुरु सां.यो. कंचनबा (मेडा)

अपने कर्म को कुशलता पूर्वक करना ही योग है। प्रारब्धवश जिस मनुष्य के जीवन में उसका कर्म नियत हुआ है, उस कर्म को कुशलता पूर्वक करे तो उसे योग कहेंगे। एक दरजी कपड़े की सिलाई अच्छी तरह करता है, ऐसा नहीं करता कि एक वांह लंबी और दूसरी छोटी हो, वह बड़ी एकाग्रता से चित्त (मत) को उस सिलाई के कार्य में लगाता है – वही योग है।

हम जब कथा सुनने जांय या पुस्तक वांचे, उस समय मन एकाग्र न होतो उस कथा के श्रवण का या पुस्तक पढने का लाभ नहीं मिलेगा। यदि उसमें दत्त चित्र होकर श्रवण यां वांचन करते है तो वही योग कहलायेगा। इसी तरह जीवन का एक-एक कर्म यदि कुशलता पूर्वक चित्तवृत्ति स्थिर करके करते हैं तो उसी को योग कहा जायेगा। जीवन के व्यवहार में भी एक एक वात समझकर कार्य को करते रहेने से, कार्य को सुलभ बनाने से सफलता की प्राप्ति ही योग है। भक्ति के मार्ग में भगवान के साथ जीवन को सतत भक्तिमय बना देने से भगवान के साथ योग होने में देर नहीं होगी।

योग के तीन प्रकार है – (१) कर्म योग (२) भक्ति योग (३) ज्ञान योग. जीवन में मात्र कर्म योग या भक्ति योग अथवा ज्ञान योग काम में नहीं आता। इन तीनो योगों का एक साथ समन्वय होने पर ही जीवन सुन्दर बनता है और जीवन चमक उठता है। मात्र ज्ञानयोग व्यक्ति को शुष्क वेदान्ती बना देता है। मनुष्य ''अहं ब्रह्मास्मि, सर्व खल्विदं ब्रह्म'' इस तरह के वेदांत वाक्य को यत्र तत्र बोलते रहने से पागल की तरह होस्पिटल में भर्ती करना होगा। मात्र भक्ति योग मनुष्य को एकाकी बनाकर जीवन के उत्तर दायित्व से अलग कर देता है। मात्र कर्म योग भी कर्मठता या पाप के भार को ढोने की बात समझाता रहेगा। इसका हार्द यह हुआ कि प्रत्येक योग में कर्म योग, भक्ति योग तथा ज्ञान योग का विवेकपूर्वक समन्वय हो तभी पूर्ण सफलता मिलेगी।

जैसे – भोजन में दाल इत्यादि रसोई बनाते हैं, दाल बनाते समय दाल बनाने की पूरी क्रिया करते है, यही कर्म योग है। परंतु इस दाल को हमारे भगवान के लिये मेहमान पुत्र इत्यादि की भावना से भक्ति भावपूर्वक भोजन को बनाते है वही भक्तियोग है। इसके बाद दाल में प्रमाण के अनुसार नमक, मरचां, गुण, पानी इत्यादि डालते हैं फिर उसे पकाते हैं यही ज्ञान योग है।

इस तरह कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञान योग तीनो का समन्वय हो तो दाल बनाने में सुमेल रहे और कर्म में बरक्कत हो। अन्यथा दाल बन नहीं पायेगी। ऐसे तो होटलों में चटाकेदार दाल बनती है, लेकिन वहाँ पर कर्मयोग तथा ज्ञान का ही समन्वय होता है। भक्ति योग का समन्व यनहीं होता, जिससे मक्खियों को भी बाफ देते हैं। दाल बनाने की क्रिया कर्म योग करे तथा भगवान, पति, पुत्र या अतिथि को स्वस्छ भावना से उस में भक्तियोग का समन्वय हो, परंतु ज्ञान योग का समन्वय न होतो कितना मरचा, नमक, हल्दी, मसाला डाला जाय इसका ज्ञान न हो तो वह दाल खारी बनेगी या तीखी बनेगी ? अथवा दाल को कितना उबालना है इसका ज्ञान न हो तो दाल में हल्दी, मसाला तैरता ही रहेगा पानी अलग और दाल अलग। इस तरह अस्वाद दाल बनजायेगी। इस में कोई तत्व नहीं रहेगा। तीनो के समन्वय से ही योग बनेगा और योग की सार्थकता होगी। प्रिय भक्तों। जीवन में प्रत्येक कर्म में कर्मयोग, भक्ति योग, ज्ञान योग का समन्वय नहीं होगा तो जीवन में सुख-शांति, आनंद नहीं मिलेगा। इसलिये हम निष्काम भाव से कर्म करेंगे तो जीवन में भक्ति तथा ज्ञान अपने आप आजायेगा। अपने चित्त की शुद्धि स्वतः हो जायेगी।

महाभारत में तुलाधार वैश्य की वात आती है। उसके पास बीजरी नाम का एक ब्राह्मण ज्ञान प्राप्त करने के लिये आता है। उस समय तुलाधार ने कहा कि भाई मेरे पास तो एक ही ज्ञान है कि मैं अपने तराजू को छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सबके लिये निष्पक्ष होकर समभाव से वजन करके देसकूं। गोरा कुंभकार घड़ा बनाते – बनाते (पकाते-पकाते) अपने जीवन के घड़े को पका दिया। सावंता माली ने बगीचे में घास की सफाई करते करते अपने जीवन में काम-क्रोध-लोभ-मोह को सफा कर दिया। ईसी को योग का समन्वय कहते हैं। भगवान प्रसन्न हो इस भाव से भक्ति करनी चाहिए। निष्काम कर्म करने से भक्ति निष्काम हो जाती है।

इस तरह कर्म, भक्ति, ज्ञान के त्रिवेणी संगम होने पर अन्तःकरण का पट शुद्ध हो जाता है, उसी में ब्रह्म का प्रतिबिम्ब दिखाई देने लगता है। भक्ति में मिथ्याचार नहीं होना चाहिये। निर्दुष्ट भक्ति होगी तथा भावात्मक भक्ति होगी तो निश्चित ही भक्ति के रस में डूबने का अवसर मिलेगा।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में रामनवमी को श्रीहरि प्रागट्योत्सव सम्पन्न

चैत्र शुक्ल-९ को श्री स्वामिनारायण मंदिर अमदावाद में प्रातः ६-३० से ७-०० बजे तक अक्षर भुवन में बिराजमान बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का पाटोत्सव महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न हुआ था । दोपहर में १२-०० बजे श्री रामजन्मोत्सव की आरती विधिवत की गयी थी । आज के दिन गाँव के तथा शहर के भक्त दर्शनार्थ उमटे थे । रात्रि में ८ बजे से १० बजे तक मंदिर के विशाल चोक में कीर्तन-भजन-गर्बा-रास का आयोजन किया गया था। सुप्रसिद्ध गायक श्री जयेशभाई सोनी तथा उनके सहयोगी जन नंद-संतो द्वारा रचित कीर्तन को गाये थे । इस प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री पार्षद मंडल के साथ पधारे थे । सभा में विराजमान होकर कीर्तन का आनंद लिये थे । रात्रि में १०-१० बजे सर्वोपरि श्री बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के प्रागट्योत्सव की आरती की गयी थी । जिसका सभीने दर्शन का अलभ्य लाभ लिया था । समग्र प्रसंग में पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन में ब्र. राजेश्वरानंदजी, को. जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, राम स्वामी इत्यादि संत मंडलने सुंदर व्यवस्था की थी। (शा. मुनि स्वामी)

घाटलोडिया मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया का ७ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री की उपस्थिति में ता. १०-३-१४ को धूमधाम से मनाया गया था ।

गं.स्व. जीवतीबहन नारणभाई पटेल कृते प्रवीणभाई तथा परिवार के लोग यजमान बनकर अलौकिक लाभ लिये थे । पाटोत्सव के शुभदिन ब्राह्मणों द्वारा ठाकुरजी का पूजन करवाया गया था । प्रासंगिक सभा में युवानो द्वारा धुन-कीर्तन किया गया था । प.पू. बड़े महाराजश्री यजमान के निवास स्थान पर पदार्पण करके सभा में बिराजमान हुये थे । यजमान परिवारने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन किया था । ट्रस्टी तथा अग्रगण्य हरिभक्त महाराजश्री का पुष्पहार से संम्मान किया था । आये हुये संतो में स्वा. हरिकृष्णदासजी, रघुवीर स्वामी, शा. पी.पी. स्वामी, जगदीश स्वामी, कृष्णप्रसाद स्वामी, राम स्वामी इत्यादि संतो की प्रेरकवाणी के प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । श्री नरनारायण युवक मंडल तथा महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी । सभा का संचालन चैतन्य स्वरुप स्वामीने किया था। (को. सोमाभाई तथा प्रवीणभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सोला रोड भव्य सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा संतो की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ९-३-१४ को भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, स्वा. नारायणमुनिदासजी, इत्यादि संतोने श्रीहरि की महिमा को समझाया था । आगामी श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में होने वाले आध्यात्मिक तथा सामाजिक कार्यक्रमो में हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा में लगे ऐसा सभी से कहा था । ता. २३-३-१४ को मंदिर में पाटोत्सव के प्रसंग पर यजमानो के लिये बोली बोलने का कार्यक्रम रखा गया था । जिस में अनेकों भक्तोंने सेवा का लाभ लिया था ।

विशेष जानकारी - प्रत्येक महीने में आयोजित सभा में सोला विस्तार के हरिभक्त भाग लेते हैं । (समस्त सत्संग समाज - सोला रोड)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी के आशीर्वाद से कांकरिया में पांच वर्ष से प्रत्येक हरि नौम को जेतलपुर से सां.यो. नर्मदाबा बहनों को कथा का लाभ देने के लिये पधारती हैं ।

मीनाबहन धीरजभाई ठक्कर तथा वर्षाबहन नटवरलाल कोटक की माताजी हंसाबहन के स्मरणार्थ ता. ७-४-१४ से ११-४-१४ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण की कथा सां. नर्मदाबा के वक्ता पदपर संपन्न हुई थी । कांकरिया के दोनो महंत स्वामीने पूर्ण सहयोग दिया था । यहाँ की महिला मंडल की सेवा प्रेरणा रुप थी।

कथा के प्रथम दिन बड़ी गादीवालाजी तथा ता. ९-४-१४ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी सभी को दर्शन-आशीर्वाद का लाभ देने के लिये पधारी थी। (कांकरिया महिला मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (आर.सी. टेकनिकल रोड) घाटलोडिया का तीसरा पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. २३-३-१४ को श्री स्वामिनारायण मंदिर (आर.सी. टेक.) घाडलोडिया का तीसरा पाटोत्सव विधिपूर्वक मनाया गया था ।

इस प्रसंग पर श्री कल्पेशभाई के. पटेल के यमजान पद पर ध्वजा के यजमान श्री दिलीपभाई पटेल तथा महापूजा के यजमान श्री प्रवीणभाई पी. पटेल थे ।

महापूजा शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा शा. दिव्यप्रकाशदासने कराई थी । अन्नकूट आरती के यजमान मुकेशभाई थे ।

प्रासंगिक सभा में महंत स्वा. हरिकृष्णदासजी, महंत पी.पी. स्वामी, महंत हरिॐ स्वामी इत्यादि संतो के प्रेरकवाणी का लाभ मिला था । पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन में इस विस्तार में आगामी ता. १५-५-१४ से १९-४-१४ तक श्रीमद् भागवत पंचाहन रात्रि पारायण स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न होगा । इस विस्तार के सभी हरिभक्तों को लाभ लेने के लिये अनुरोधहै ।

संपर्क : रमेशभाई पटेल - ९५८६४२२६०९

श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के महंत के ५४ वें पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ३१-३-१४ से ता. ४-४-१४ तक

श्री घनश्याम लीलामृत सागर पंचान्ह पारायण स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर हुई थी । ता. ४-४-१४ को भावि आचार्य १०८ श्री लालजी महाराजश्री पधारे थे, ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में यजमान परिवार को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । यहाँ पर श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में चल रही द्वितीय सत्संग सभा ता. २६-२-१४ को संपन्न हुई थी । स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने कथा श्रवण का लाभ दिया था । संध्या आरती में करीब ५०० जितने भक्त उपस्थित थे । महिलाओं की सेवा सराहनीय थी । (को. श्री नवावाडज)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में बापूनगर में साप्ताहिक सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी की प्ररणा से श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २२-३-१४ स प्रति शनिवार को संतो द्वारा सभा का आयोजन किया जाता है । प्रथम सभा हर्षद कोलोनी, २-३-४ एप्रोच मंदिर पांचवी सभा कर्म शक्ति मंदिर में हुई थी । इस विस्तार के बहुत सारे हरिभक्त कथा का लाभ लिये थे ।

ता. १५-३-१४ को जेतलपुर ता. ३-४-१४ को कालूपुर मंदिर के लिये पदयात्रा का आयोजन किया गया था । एप्रो चमंदिर के १० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में २६-२-१४ तक साप्ताहिक सभा चालू रहेगी । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (श्रीनगर) समूह महापूजा तथा ३५ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से ता. २७-२-१४ को समूह महापूजा का आयोजन किया गया था । जिस के यजमान प.भ. नारणभाई हरगोवनदास पटेल थे । महापूजा शा. चैतन्यस्वरुपदासने करवायी थी । जिस में २५० भक्तों ने लाभ लिया था ।

ता. २८-२-१४ को ३५ वाँ पाटोत्सव उपरोक्त यजमानो के द्वारा संपन्न हुआ था । ठाकुरजी का अभिषेक-पूजा यथा विधिहुई थी । इस प्रसंग पर महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी महंत स्वा. पी.पी. इत्यादि संतोने कथा-प्रवचन का लाभ दिया था । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की तथा बहनोने सुंदर सेवा की थी । शा. चैतन्य स्वामीने आयोजन किया था । (को. श्रीनगर मंदिर)

कर्मशक्ति पार्क मंदिर का १६ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभा आशीर्वाद तथा महंत स्वामी के मार्गदर्शन से ता. २०-४-१४ को १६ वाँ पाटोत्सव संपन्न हुआ । इस प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव के महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १९-४-१४ को रात्रि सभा की गयी थी । जिस में कीर्तन-कथा का आयोजन किया गया था । कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी तथा एप्रोच मंदिर तथा कोटेश्वर गुरुकुल के संतोने लाभ दिया था ।

प्रातः काल धुन के बाद स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी तथा दिव्यप्रकाशदासने भी लाभ दिया था ।

प.पू. बड़े महाराजश्रीने अन्नकूट की आरती के बाद सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी । (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा (इडर देश)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वामी विश्ववल्लभदास, स्वामी बालकृष्णदासजी के मार्गदर्शन मे फाल्गुन कृष्ण-१ को फुलदोलोत्सव तथा चैत्र शुक्ल-९ को श्रीहरि प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था । जिस में महापूजा, अखंड धुन, कीर्तन-भजन, कथा इत्यादि कार्यक्रम किये गये थे । (भूमित पटेल)

महेसाणा गाँव में कशलीबाई के घर चरणारविंद का चौथा स्थापना दिन सम्पन्न

प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर धाम के महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से तथा महेसाणा मंदिर के महंत स्वामी के आयोजन से परम भक्तराज कशलीबाई केघर पर एकादशी को प्रातः काल श्रीहरि आकर पत्थर पर अपना चरणारविंद की छाप दिये थे, जिसे कशलीबाई दीवाल के भीतर सुरक्षित रखी थी । वही चरणारविंद ४ वर्ष पूर्व ११ के दिन दीवाल के भीतर से मिला था । जिसे प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से पूजन करवाया गया था । बाद में श्यामचरण स्वामीने सभा की तरफ से पूजन किया था । बाद में प.पू. बड़े महाराजश्री ने पूजन-आरती की थी । संतो के प्रवचन में स्वा. नारायणप्रसाददासजी, स्वा. उत्तमप्रियादसजी, स्वा. विश्वविहारीदासजी थे । यजमान का संमान किया गया था । अन्त में प.पू. बड़े महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । कार्यक्रम का संचालन जेतलपुरधाम के शा. भक्तिनंदनदासजीने किया था । रात्रि में कशलीबाई के घर पर भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया था ।

भांत गाँव में प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर दाम के शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. पुरुषोत्तमदासजी स्वामी की प्रेरणा से भात गाँव में विराजमान भगवान स्वामिनारायण आदि देवों का पाटोत्सव ता. १९-३-१४ को धूमधाम से मनाया गया था । महापूजा दास स्वामीने करवाई थी । बाद में सत्संग सभा में जेतलपुर से शा. भक्तिनंदनदासजी कथा की थी । स.गु. श्यामचरण स्वामी, भक्तिवल्लभदासजी, उत्तमप्रियदासजी इस कार्यक्रम में पधारे थे । अन्नकूट की आरती के बाद सभी महाप्रसाद ग्रहण किये थे । पाटोत्सव के यजमान प.भ. श्री गिरीशभाई नारणभाई पटेल थे।

निर्माणाधीन स्वामिनारायण मंदिर कलोल-पंचवटी में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर धाम के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी एवं शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से निर्माणाधीन श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल-पंचवटी में ता. १-३-१४ रविवार को सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । जिस में जेतलपुर से शा. भक्तिनंदन स्वामीने कथा के माध्यम से मंदिर के महत्व को

समझाया था । पू. श्यामचरण स्वामी तथा उत्तमप्रिय स्वामी भी पधारे थे। (विश्वप्रकाश स्वामी, महंतश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कठलाल पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी आत्मप्रकासदासजी तथा स.गु. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से कठलाल गांव में विराजमान भगवान स्वामिनारायण आदि देवों का पाटोत्सव ता. १७-३-१४ को धूमधाम के साथ मनाया गया था । जिस में महापूजा, अभिषेक इत्यादि कार्यक्रम संत-भक्तों द्वारा किया गया था । बाद में सत्संग सभा में जेतलपुर से शा. भक्तिनंदन स्वामी, शा. हरिॐ स्वामीने कथा की थी । इस प्रसंग पर स्वा. विश्वप्रकाशदासजी, स.गु. श्याम स्वामी, भक्तिवल्लभ स्वामी, उत्तम प्रिय स्वामी पधारे थे । अन्त में अन्नकूट की आरती करके सभी प्रसाद ग्रहण किये थे . यजमान पद पर प.भ. दिलीपभाई पटेल थे । (महंत के.पी. स्वामी जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोली पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के मंदिर में विराजमान स्वामिनारायण आदि देवों का पाटोत्सव १९-३-१४ को धूमधाम से किया गया था । ठाकुरजी की षोडशोपचार पूजा-अभिषेक तथा भक्तों द्वारा किया गया था । बाद में सत्संग सभा में जेतलपुर से शा. भक्तिनंदन स्वामी, भक्तिवल्लभ स्वामी, उत्तमप्रिय स्वामी कथा-प्रवचन किये थे । इस प्रसंग पर के.पी. स्वामी, वी.पी. स्वामी, पू. श्यामचरण स्वामी पधारे हुए थे ।

(शा. भक्तिनंदनदासजी, जेतलपुरधाम)

श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्णमहाराज का १८८ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. आत्मप्रकाशदासजी एवं पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री रेवती बलदेव हरिकृष्ण महाराज आदि देवों का पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से २३-३-१४ को धूमधाम से मनाया गया था । जिस में महाविष्णुयाग का भी आयोजन किया गया था ।

ता. २३-३-१४ को कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ था । जिस में ठाकुरजी की मंगला आरती, महापूजा, महा अभिषेक, प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों वेदोक्त विधिसे संपन्न किया गया था । बाद में श्रृंगार आरती तथा यज्ञ की पूर्णाहुति प.पू. महाराजश्री के हाथों हुई थी । इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । प.पू. महाराजश्री का सभा में श्यामचरण स्वामी, भक्ति स्वामी, उत्तमप्रिय स्वामीने पूजन किया था । इस पाटोत्सव के यजमान किरीटभाई तथा विपुलभाई, शिरीजभाई (यु.एस.ए.) थे । इस प्रसंग पर अनेक धामों से संत पधारे थे । जिस में अमदावाद, मूली, जमीयतपुरा, नारणपुरा, धोलका, छपैया, मकनसर, सायला, कांकरिया, अयोध्या, महेसाणा, जयपुर इत्यादि स्थानों से पधारे थे। इस के अलावा सां.यो. बहने भी पधारी थी । संतो के प्रवचन के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । अंत में सरेन्द्रबाई पटेल (विशालावाले) ने आभार विधिकी थी । कार्यक्रमका संचालन शा. भक्तिनंदनदासजीने किया था । सभी प्रसाद ग्रहण करके प्रस्थान किये थे । आयोजन संत मंडलने किया था । कांकरिया के युवान, बापूनगर, मांडल, नाना उभडा, जेतलपुर के युवान तथा महिला मंडलने प्रशंसनीय कार्य किया था । बलदेव महाराज सभी के ऊपर खूब कृपा करें ।(महंत के .पी. स्वामी, जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर काशीन्द्रा ८ वाँ पाटोत्सव

जेतलपुरधाम की छत्रछाया में काशीन्द्रा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी एवं पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से काशीन्द्रा में बिराजमान भगवान स्वामिनारायण आदि देवों का सप्तम वार्षिक पाटोत्सव ता. २५-३-१४ को धूमधाम से किया गया था । प.पू. बड़े महाराजश्री का स्वागत गांव के बाहर से गाजे बाजे के साथ किया गया भाइयों के मंदिर में आरती उतारकर बहनों के मंदिर में पूजन-अभिषेक अन्नकूट की आरती प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों की गयी थी । सत्संग सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन यजमान परिवार प.भ. अ.नि. जयंतीभाई, नरसिंहभाई पटेल परिवार तथा प.भ. हसमुखभाई नरसिंहभाई पटेलने किया था । जेतलपुर से पू. शा. पी.पी. स्वामी जयपुर से शा. देवस्वरुप स्वामी, शा. हरिप्रकाश स्वामी पधारकर कथा प्रवचन किये थे । अंत में प.पू. बड़े महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । कार्यक्रम का संचालन देवस्वरुप स्वामीने किया था । सभा पूर्ण होने के बाद हरिभक्त के घर पदार्पण करके यहीं पर भोजन किये थे। (भक्तिनंद स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर का १७३ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वामी शा. आत्मप्रकाशदासजी एवं पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का १७३ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । इस प्रसंग पर २३-३-१४ से २७-३-१४ तक सत्संगिभूषण की कथा का आयोजन किया गया था, जिस के वक्ता यज्ञप्रकाश स्वामी थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक किया गया था । बाद में अन्नकूट की आरती की गयी थी । सभा में कथा की पूर्णाहुति किये थे । इस के बाद पाटोत्सव के यजमान श्री चन्द्रकांतभाई तथा उनके पुत्र नीलकंठ, निमेष, तुषारकुमार, कीर्तन, धार्मिक, नित्य, जय, काछिया परिवार ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन किया था । सभा में जेललपुरधाम से संत पधारे थे । के.पी. स्वामी तथा मुक्तजीवन स्वामी की सेवा सराहनीय थी । अंत में प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । अन्नकूट की आरती के बाद प.पू. महाराजश्री तथा संत यजमान के घर पधारे थे । (भक्तिनंद स्वामी - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोठंबा पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर के महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी एवं पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर का पाटोत्सव २८-३-१४ को धूमधाम से

मनाया गया था । इस प्रसंग पर हरिकृष्ण महाराज की महापूजा तथा प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों अभिषेक किया गया था । सभा में यजमान परिवार श्री किरीटभाई, श्री जशवंतलाल तथा इनके पुत्र दर्शित, पिंकल, अंकित, विकेन, अमित काछिया परिवार द्वारा प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन किया गया था । सभा में अनेकों धाम से संत पधारे थे । जिस में - जेतलपुरधाम से स.गु. पी.पी. स्वामी, के.पी. स्वामी, श्यामचरण स्वामी, भक्तिनन्दन स्वामी, यज्ञप्रकाश स्वामी, घनश्याम स्वामी, नारायण स्वामी, मुनि स्वामी, जगतप्रकाश स्वामी पधारे हुए थे । सभी के प्रसंगोचित प्रवचन के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संत यजमान परिवार के घर पर भोजन के लिये पधारे थे ।(श्री. देवस्वरुप स्वामी तथा अमीत काछिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के शा. स्वा. आत्मप्रकासदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से बालवा स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव २५-३-१४ को धूमधाम से मनाया गया था । जिस में जेतलपुरधाम से महंत के.पी. स्वामी, भक्तिवल्लभ स्वामी, उत्तमप्रिय स्वामी, शा. हरिस्वरुपानंदजी इत्यादि संतो द्वारा भगवान का अभिषेक किया गया था। सभा में संतोने कथा प्रवचन किया था । इस प्रसंग पर बालवा में बालसिबिर करने की घोषणा की गयी थी । मंदिर के ऊपर ध्वज चढाने के बाद सभी प्रसाद लेकर प्रस्तान किये थे । (न.ना. देव युवक मंडल - बालवा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सादरा में नूतन मंदिर का स्वात पूजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ का मंदिर जीर्ण होने से पुन: निर्माण किया गया था । ता. २६-३-१४ को प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथों खात-पूजन किया गया था । खात मुहूर्त के यजमान प.भ. जगदीशभाई, कालीदास दरजी, सुपुत्र प.भ. निरजबाई दरजी परिवार तथा सहयजमान श्री सुरेन्द्रभाई भाईलालभाई परमार सुपुत्र मनीषभाई एस. परमार थे । इस प्रसंग पर अनेकों धाम से संत पधारे थे । जिस में जेतलपुर से पू. पी.पी. स्वामी ने सभा में मंदिर की महिमा का वर्णन किया था । जेतलपुर, कांकरिया, जमीयतपुरा, नारणपुरा, जयपुर, छपैया, सोकली, हिंमतनगर, कालुपुर इत्यादि स्थानों से संत पधारे थे । प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । हिंमतनगर से प्रकाशित शिक्षापत्री प्रश्नोतरी का विमोचन किया गया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री संत निवास स्थान पर पधारे थे । भक्तों के आग्रह पर पी.पी. स्वामीने सुरेन्द्रभाई परमार (ईन्जिनियर) को साथ में रखा था । सभी लोग भोजन का प्रसाद लेकर प्रस्थान किये थे । (के.पी. स्वामी जेतलपुरधाम)

नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर धनवाडा स्वात विधि

धनवाडा गाँव में स्वामिनारायण मंदिर जीर्ण होने से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के महंत स्वा. शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा भक्तिवल्लभ स्वामी की प्रेरणा से नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर की खात विधिता. २१-३-१४ को पू.पी.पी. स्वामी, भक्तिवल्लभ स्वामी, पूर्णप्रकाश स्वामी (धोलका) तथा मुख्य यजमान प.भ. रघुवीरभाई विठ्ठलभाई हमीराणी पुत्र दर्पण तथा जलपन हमीराणी परिवार राणपुरवाला द्वारा की गयी थी । सत्संग सभा में संतोने प्रवचन के माध्यम से मंदिर का महत्व समझाया था । अतमें शा. पी.पी. स्वामीने मंदिर में सेवा का महत्व प्रतिपादित किया तो लोगों ने स्वकीय योगदान लिखवाया था । मंदिर की पूर्णा उत्तरादयित्व प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा गाँव के हरिभक्तों के आग्रह पर पू. शास्त्री पी.पी. स्वामी, भक्ति वल्लभ स्वामीने सम्हाली थी । अन्त में सभी ने प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किया था । (शा. भक्तिनंदनदास - जेतलपुरधाम)

कोलाद से अमदावाद श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ पदयात्रा

श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष्य में खाखरिया प्रदेश के कोलाद गाँव के २० हरिभक्तों ने कोलादसे अमदावाद श्री नरनारायणदेव के दर्शनार्थ पदयात्रा का आयोजन किया था ।(को. मणीलाल परसोतमदास)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर श्रीहरि प्रागट्योत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से चैत्र शुक्ल-९ को प्रात: ८ से ११ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन, श्री रामजन्मोत्सव तथा शहर के राजमार्ग पर ठाकुरजी की भव्य शोभायात्रा तथा रासोत्सव एवं रात्रि १०-१० बजे श्रीहरि प्रागट्योत्सव की आरती धूमधाम से की गयी थी । इस प्रसंग पर मूली के महंत स्वामी संत मंडल के साथ पधारे थे । कोठारी स्वामी के मार्गदर्शन में श्री नरनारायण युवक ंडल ने सुंदर आयोजन किया था । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

मेमका गाँव में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह्न पारायण

श्री हरिकी कृपा से तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से एवं सां.यो. कमलाबा की प्रेरा से सां. जडीबा के स्मरणार्थ यहाँ पर ता. २-३-१४ से ६-३-१४ तक महिला मंडल मेमका द्वारा श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह्न पारायण सां. कोकिलाबा के वक्तापद पर हुई थी । पोथीयात्रा धूमधाम से निकाली गयी थी । इस विषय पर सहिंता पाठ, ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट, शोभायात्रा कथा में आने वाले उत्सव धूमधाम से मनाये गये थे । रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये गये थे । ता. ६-३-१४ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । कथा की पूर्णाहुति करके सभी को प्रसन्न की थी । अनेकों धाम से सां.यो. बहने आयी थी । सभा संचालन सां.यो. उषाबाने किया था । महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर वांकानेर

श्रीजी महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के वांकानेर मंदिर में चैत्र शुक्ल-९

को राजमार्ग पर ठाकुरजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी थी। महा मंत्र धुन, कीर्तन करते हुए हरिभक्त इस शोभायात्रा में जुडे थे। रात्रि में १०-१० बजे मंदिर में घनश्याम जन्मोत्सव की भव्य आतिशबाजी की गयी थी । साधु जयकृष्णदास गुरु सूर्यप्रकाशदासजी तथा युवक मंडलने श्रद्धापूर्वक सेवा कार्य किया था। (सूर्यप्रकाशदास)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया

यहाँ कोलोनिया मंदिर मे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से विकेन्ड में सायंकाल भव्य रंगोत्सव पू. बिन्दुराजा, चि. सौम्यकुमार, चि. सुव्रतकुमार के शुभ सानिध्य में किया गया था। इस प्रसंग पर यहाँ के महंत स्वामी डिट्रोईट-विहोकन आदि मंदिर के संतोने कथा-प्रवचन-कीर्तन के साथ रंगोत्सव की महिमा समझाई थी । यजमानों का सन्मान संतोने किया था । अंत में ठाकुरजी की थाल तथा आरती की गयी थी । युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी। (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन में फूलदोलोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी जे.पी. तथा शास्त्री स्वामी विश्वविहारीदासजी की प्रेरणा से ठाकुरजी के समक्ष फूलदोलोत्सव, रामनवमी को हरिप्रागट्य का कार्यक्रम किया गया था । महंत स्वामीने श्री नरनारायणदेव जयंती के निमित्त भगवान की कथा की थी । यजमानों का बहुमान करके श्री भक्तिभाईने आगामी उत्सव को बताया था। महामंत्र धून के बाद आरती की गयी थी।(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटास्का

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी जे.पी. स्वामी तथा शास्त्री विश्वविहारीदासजी की प्रेरणा से ठाकुरजी के समक्ष फुलदोलोत्सव, रामनवमी को श्रीहरि प्रागट्योत्सव, श्री हनुमान जयंती, प.पू. बड़े महाराजश्री का ७० वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था। राम नवमी को शास्त्री स्वामीने महापूजा की थी। जिस में बड़ी संख्या में हरिभक्तोने भाग लिया था । इस प्रसंग पर लूईवील से धर्मवल्लभ स्वामी संत हरिभक्तो के साथ पधारे थे। लूईवील में नवनिर्माणाधीन मंदिर के लिये हरिभक्तोने आर्थिक सेवा के लिये अपना नाम लिखवाया था । (वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर-अमदावाद यात्रिक धर्मशाला विभाग में पूर्व बुकिंग हेतु संपर्क सूत्र ९९१३५ ३७०३५

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर नया फोन नं. ९०९९९३९३७६

अपना श्री स्वामिनारायण मासिक प्रतिमास ११ तारीख को नियमित पोस्ट होता है। २० ता. तक सभी अंक मिल जाते हैं। फिर भी अंक पोस्ट में न मिलें तो स्थानिक पोस्ट ओफिस में सिकायत करके यहाँ के कार्यालय में सूचना देनी आवश्यक है। यदि स्टोक में अंक होगा तो पुन: प्रेषित किया जायेगा

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

अमदावाद कर्म शक्ति : प.भ. परसोत्तमभाई रुडाभाई सुहागिया (उम्र ८५ वर्ष) ता. २०-२-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

गांधीनगर : प.भ. बाबूलाल साकलचंद मोदी (उम्र ८१ वर्ष) ता. ४-३-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

अमदावाद-विराटनगर : प.भ. राजेश्वरीबहन शशीकांतभाई ता. २५-३-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षर निवासिनी हुई हैं।

लालोडा (इडर देश) : प.भ. मोहनभाई नरसाभाई (सरपंचश्री) की माताजी सांकीबहन नरसाभाई (उ. ८५ वर्ष) ता. २७-३-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षर निवासिनी हुइ हैं।

अमदावाद (मूल मातरगाँव) : श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल के निष्ठावाले प.भ. धीरुभाई ब्रह्मभट्ट के बड़े भाई श्री वासुदेवभाई के सुपुत्र प.भ. कनुभाई ता.४-४-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षर निवासी हुए हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) सर्वोपरिधाम छपैया में रामनवमी के प्रसंग पर बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का अभिषेक करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री (२) कर्म शक्ति मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट की आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री (३) धोलका देश के सरोड़ा मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन (४) लोक सभाके निर्वाचन के अवसर पर मतदान करते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री (५) कांकरिया मंदिर में प.पू. गादीवालाजी की प्रेरणा से पारायण प्रसंग पर कथा श्रवण करती हुई बहनें ।(६) कांकरिया मंदिर में श्री हनुमान जयंती प्रसंग पर मारुति यज्ञ की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री (७) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में दियोदर (बनासकांठा) गाँव में सत्संग सभा में लाभ देते हुए शा. पी.पी. स्वामी, शा. राम स्वामी, शा. छपैया स्वामी, शा. मुनि स्वामी (८) शिकागो मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्री का प्राकट्योत्सव मनाते हुए तथा महापूजा करते हुए जे.पी. स्वामी, विश्वविहारी स्वामी तथा शास्त्री धर्मवल्लभदासजी तथा हरिभक्त (९) डिट्रोईट मंदिर में रामनवमी के प्रसंग पर श्रीहरि के प्राकट्योत्सव को मनाते हुए संत-हरिभक्त ।

Registered under RNI NO.-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd PSO on 11th every month under postal Regd. No.GUJ.581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी - कच्छ में प.पू. बड़े महाराजश्री का ७० वाँ प्राकट्योत्सव ।

जन्मोत्सव के यजमान श्री बलदिया (वर्तमान - नैरोबी) के श्री कांति नारायण केराई प.पू. बड़े महाराजश्री को भेंट अर्पित करते हुए ।

मांडवी (कच्छ) महोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. लालजी कल्याण शियाणी मानकूवा वर्तमान मोम्बासा पू. बड़े महाराजश्री के साथ ।

Jagadish Offset
Praful Kharsani